धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

Regd. No. 58414/94

स्वामी रामानन्द जी द्वारा संचालित

हमारी साधना

त्रैमासिक

वर्ष 31 • अंक 3 • जुलाई-सितम्बर 2024

मूल्य रु. 25/-

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती॥

करुणामयी सुमित्रा माँ

हमारी साधना

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।
न त्वहं कामये राज्यम्, न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्ति नाशनम्।।

वर्ष : 31 जुलाई-सितम्बर 2024 अंक : 3

भजन

नाम जप ले हरि का मेरी रसना।
राम नाम रस मधुर पान करु
तजि षट रस का सुख सपना।
पै है परम शान्ति सुख सहजहिं
तीनि ताप को मिटि तपना।।
नामहिं के बल लह्यो परम पद
अजामील गनिका सदना।
रामसरन अस समुझि नाम जपि
जनम सफल करिले अपना।।

भजन संख्या 10 - स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'

प्रकाशक
साधना परिवार
स्वामी रामानन्द साधना धाम,
संन्यास रोड, कनखल,
हरिद्वार-249408
फोनः 01334-311821
मोबाइलः 08273494285

सम्पादिका
श्रीमती रमना सेखड़ी
995, शिवाजी स्ट्रीट,
आर्य समाज रोड
करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
मोबाइलः 09711499298

उप-सम्पादक
श्री रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'
1018, महागुन मैंशन-1,
इन्दिरापुरम,
गाजियाबाद-201014
ई-मेलः rcgupta1018@gmail.com
मोबाइलः 09818385001

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	रचयिता	पृ.सं.
1.	चित्र – करुणामयी सुमित्रा माँ		2
2.	भजन	स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'	3
3.	सम्पादकीय		5
4.	भजन – देवता से (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)	श्री नरेन	6
5.	भजन – प्रभुजी हम आये शरण तिहारी	कान्ति सिंह	6
6.	भजन – गुरु पूर्णिमा का देखो है पर्व आज आया	संकलन - अरुणा पाण्डेय	6
7.	भजन – साधना-पथ	श्री नरेन्द्र जी	7
8.	गीता विमर्श – धारावाहिक	स्वामी रामानन्द जी	8-10
9.	गुरु वाणी – धारावाहिक		11
10.	Letters to Seekers – धारावाहिक		12-13
11.	भागवत के मोती – धारावाहिक		14
12.	साधना धाम की विभूतियाँ – धारावाहिक		15-18
13.	बचे रहियेगा – गुरु महाराज का दुर्लभ लेख (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)		19-20
14.	ईश्वर, आत्मा और प्रकृति (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)	उर्मिला सहगल	20-21
15.	एक अनोखा बन्धन (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)	श्रीमती सुमित्रा सभ्रवाल	22-23
16.	प्रार्थना की उपादेयता (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)	श्रीमती चन्द्रावती शर्मा	24-26
17.	निःस्पृहता	रमना सेखड़ी	27-28
18.	धर्म की परिभाषा	रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'	29-31
19.	बाल साधना शिविर 2024 का विवरण		31
20.	साधना परिवार की कार्यकारिणी बैठक का विवरण		32-33
21.	वर्ष 2024 में तपस्थली में गुरु पूर्णिमा महोत्सव का विवरण तथा प्रवचन सार		33
22.	साधना धाम हरिद्वार में गुरु पूर्णिमा पर्व 2024 का विवरण तथा प्रवचन सार		34-36
23.	दानदाताओं की सूची		37-39
24.	शोक समाचार		40
25.	आगामी शिविरों की सूचना		41
26.	श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य		42
27.	चित्र – बाल साधना शिविर 2024		43
28.	चित्र – गुरु पूर्णिमा शिविर 2024		44

Printed and Published by Shri Dinesh Bahl for and on behalf of Swami Ramanand Sadhna Pariwar, Sadhna Dham, Sanyasa Road, KANKHAL-Haridwar (Uttarakhand) and printed at Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla Industrial Area Phase-I, New Delhi-110020.

सम्पादकीय

सभी सुधी पाठकों को सम्पादक मण्डल का नमन!

'हमारी साधना' का इस वर्ष का तृतीय अंक पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। इसमें धारावाहिक लेखों के अतिरिक्त पुरानी पत्रिकाओं से उपयोगी लेखों की पुनरावृत्ति भी की गई है जो सम्भवत: पाठकों को रुचिकर लगेगी।

पूज्य गुरुदेव महाराज ने आदेश दिया है कि प्रत्येक साधक को प्रतिदिन रामचरितमानस का अध्ययन करना चाहिये, चाहे वह अंशमात्र ही हो। इसकी गहराई में उतरेंगे तो समझ में आयेगा कि सन्त तुलसीदास ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से किस प्रकार कर्तव्य पालन का आदर्श स्थापित किया है जिसका उपदेश भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को गीता में दिया है। जिस प्रकार गीता के कृष्ण का आदेश है कि मेरा भक्त बन, मेरी शरण में आ, उसी प्रकार मानस में श्री राम कहते हैं –

सोइ सेवक मम प्रियतम सोई। मम अनुसासन मानै जोई॥

जिस प्रकार श्रीरामचरिमानस में भगवान् राम ने कहा है –

'सब कै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बाँध बरि डोरी।'

उसी प्रकार हमारे गुरु महाराज ने पत्र संख्या 267 में कहा है –

''ममता के तागे को बटोर कर प्रभु चरणों में लगा दीजियेगा। वही हमारा है और हम उसके हैं। उसी के नाते ही और हमारे हैं। वास्तव में वे सभी प्रभु के ही हैं। ममता ही हमें परेशान करती है और दूसरों को भी।''

हम साधकों के लिए सन्देश है कि हमारे पूज्य गुरुदेव महाराज ने जो उपदेश 'पत्र पीयूष' आदि पुस्तकों के माध्यम से हमें दिये हैं हम उनका निष्ठापूर्वक पालन करें।

पाठकों से पुन: आग्रह है कि पत्रिका के सुधार हेतु अपने सुझाव तथा मार्गदर्शन देकर अनुग्रहित करते रहें।

धन्यवाद!

देवता से

(पुरानी पत्रिका से उद्धृत)

सुख के स्वप्न कर दिये मेरे सभी साकार तुमने !
भर दिया आंचल दिये कैसे नवल उपहार तुमने !
देवता ! अपना बनाया था लुटा कर प्यार तुमने !
ले लिया था अपने निज हाथों में जीवन भार तुमने !

ऐसे समदर्शी न देखा रूप है क्या, वेश है क्या।
कोई परिचित है या अनजाना किसी का देश है क्या।
जो सभी पर था बरसता प्रेम का आवेश है क्या।
तेरा जीवन एक दर्शन है मधुर सन्देश है क्या।

जगत देखा है मैंने पर कोई तुमसा नहीं देखा।
खुले दिल से लुटाये प्यार जो ऐसा नहीं देखा।
स्वार्थ से रहित मैंने कोई अपना नहीं देखा।
कहीं संतों में भी अब तक है तुम जैसा नहीं देखा।

विचारों का जगत तुमने सितारों से लिया होगा।
समझता हूँ तुम्हें मानस यह सागर ने दिया होगा।
लग्न से तुमने तप ऐसा हिमालय पर किया होगा।
मिला जो देवताओं को वही अमृत पिया होगा।

मिटा करती थी पथ की सब थकान दर्शन से ही तेरे।
निराशा में प्रभु ! आशा का तुम सन्देश देते थे।
रवि किरणों सा बनकर तुम अँधेरे को मिटाते थे।
खिंचे आते थे कितने पास आकर्षण से ही तेरे।

पड़ी सूनी हुई पतझड़ से है अब तो भरी महफ़िल।
गया साकी जो देता था प्याला प्यार का छल छल।
अनूठा था जगत भर से तुम्हारे नेह का आंचल।
निराली शान्ति थी मन को कर देती थी जो निश्चल।

– श्री नरेन

भजन

प्रभु जी हम आये शरण तिहारी
गुरु जी हम आये शरण तिहारी
पाप पुण्य कछू नहीं जानू
पड़ी हूँ द्वार तिहारे
प्रभु जी हम आये शरण तिहारी
भली, बुरी जैसी हूँ स्वामी
चरणों मे शीश झुकाऊँ
प्रभु जी हम आये शरण तिहारी
तेरी दया कृपा से भगवन
निज अग्यान मिटाऊँ
प्रभु जी हम आये शरण तिहारी
शरण पड़े की लज्जा राखो
नित-नित शीश झुकाऊँ
प्रभु जी हम आये शरण तिहारी
गुरु जी हम आये शरण तिहारी

– कान्ति सिंह

भजन

गुरु पूर्णिमा का देखो है पर्व आज आया।
सतगुरु की देन से ही हीरा जन्म है पाया।।
आओ यहाँ पे मिलके सारे खुशी मनायें।
जीवन खुशी से बीते माँगें यही दुआएँ।।
हर पल हो सतगुरु का ये प्यार भरा साया।
गुरु पूर्णिमा का देखो है पर्व आज आया।।
हो कर्म इतना ऊँचा कुल को भी ये सजाये।
मैं मैं की जगह मन में तू तू ही सदा आये।।
रख भक्तों पर भी हरदम रहमो करम की छाया।
गुरु पूर्णिमा का देखो है पर्व आज आया।।
विनती है तेरे दर पर हर पल खुशहाल रखना।
कहीं डगमगा न जाएँ हर पल संभाल रखना।।
भूलें नहीं जहां में किस काम से है आया।
गुरु पूर्णिमा का देखो है पर्व आज आया।।

संकलन - **अरुणा पाण्डेय**

साधना-पथ

तू सोच समझ कर चल रे पथिक, पुष्पों से नहीं जी को बहला।
कांटों से उलझना सीख यहां, कष्टों से जीवन सुमन खिला।।
तू सुख की खोज न कर इसमें, मदिरा में यहां की विष है भरा।
तू आंखें खोल कर चल राही, इस जग के नृत्य अरु गीत भुला।।
सुख स्वप्न है – जग स्वप्न है, स्वप्न में नहीं मन को भरमा।
तू हंस कर चलना सीख यहां, और दु:ख में भी पड़ कर मुस्का।।
तेरे जितने मीत बने हैं उनकी, मन से आशा प्रीति भुला।।
भक्ति के पथ की रीति है यह, जगती की सारी रीति भुला।
जो शास्त्र में है तू उसको, पढ़ गया भी तो क्या समझा?
जो हृदय रूपी पुस्तक का है, अब तक भी नहीं पाठ पढ़ा।।
गीत कार ने तेरा मानस, मृदु भावों से है भरा।
इस में धरती के सुन्दरतम, उद्यानों की ही है शोभा।।
तू आशा, सेवा, प्रीति के, जीवन में अपने पुष्प खिला ।
करुणा के मृदुल भावों से, अपने मानस को भरता जा।।
साहस धर कर चलना राही, पथ पर निरखो हरा भरा।
तन में चुस्ती मन में मस्ती, हृदय में हो उत्साह भरा।।
तू सत्य पथ पर चलना साधक, जग का माया जाल भुला।
तेरे जीवन का लक्ष्य है – प्रभु-प्रेम का सागर अथाह।।
चलना और न हटना पीछे, मार्ग के बाधा-कष्ट भुला।
निर्भय होकर चल रे पथिक, तू सतत विघ्नों को ठुकरा।।
पहुँचेगा अपने लक्ष्य पर तू, जो है सुन्दर और महा।
होगी तेरी कामना सफल, तू आशा के नव सुमन खिला।।

– श्री नरेन्द्र जी, जोगेन्द्र नगर

गीता विमर्श
अध्याय 6
(गतांक से आगे)

अब योगारूढ़ का लक्षण कहते हैं –

यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते।
सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढ़स्तदोच्यते ॥4॥

'जब निश्चय ही न इन्द्रियों के विषयों में, (और) न कर्मों में आसक्त होता है, (और) सब संकल्पों का परित्याग कर देता है तब योगारूढ़ कहा जाता है'॥4॥

योगारूढ़ के तीन लक्षण कहे हैं।

प्रथम, इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति का अभाव। इन्द्रियों के विषयों में आसक्त होगा तो इच्छायें होंगी, भोग की लालसा होगी। फलाकांक्षा का होना स्वाभाविक है। उसके रहने पर तो व्यक्ति पथ-भ्रष्ट होता है। योगमार्ग पर तो चल ही नहीं पाता है। इन्द्रियों का संयम आवश्यक है। आसक्ति तो उनमें सहज है। संयम न होने पर वह खींच ले जाती हैं। बिना इन्द्रिय-संयम के योगमार्ग नहीं चलता, यह तो स्पष्ट ही है।

दूसरा, कर्मों में आसक्ति रहित होना। कर्मों की आसक्ति भी व्यक्ति को स्वधर्म के मार्ग से च्युत करती है। जिस कर्म के करने में सुख है, लाभ है और यश है, व्यक्ति उसे करना चाहता है। उसके विपरीत कार्य से भागता है। परन्तु सिद्ध-कर्म-योगी तो कर्म के वास्तविक लाभ को जानता है। वह तो साधना है। वह स्वधर्म में निष्ट होता है। बहकता नहीं। उसके विषय में कहा –

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः ॥18/10॥

'अकुशल कर्म से द्वेष नहीं करता, कुशल से आसक्त नहीं होता...'। जहाँ राग है वहाँ द्वेष भी होता है। जहाँ गड्ढा है, वहाँ पास में ऊँचाई भी रहती है। योगारूढ़ कर्ममात्र के प्रति समभाव रखता है। सभी कर्म स्वधर्म होने के नाते समान हो जाते हैं। वह कर्मों की अपनी अलग सत्ता को, गुण-दोषों को स्वधर्म के सामने भूल जाता है।

तीसरा, सभी संकल्पों का संन्यास। जब तक भविष्य के लिये योजनायें बनती हैं तब तक आशा का, आकांक्षा का चक्र बाकी है, तब तक भोग की लालसा है, सुख की, मान की आकांक्षा बाकी है और, जब तक यह है, तब तक व्यक्ति स्वधर्म के पथ से च्युत हो सकता है इन प्रभावों से वशीभूत हुआ। तब तक व्यक्ति के पांव योग पर जमे नहीं हैं। किसी समय भी यह प्रेरणायें बलवती हो सकती हैं और उसे खींचकर पथ से भ्रष्ट कर सकती हैं।

जब व्यक्ति के सामने स्वधर्म ही रहता है और वह उसमें अपने भूत-भविष्य की बलि दे देता है, केवलमात्र स्वधर्म के लिये जीता है, जब इससे अनन्यरूप से स्वधर्म-निष्ठ हो जाता है, तब होता है योगारूढ़। तब वह कर्म के बन्धन से रहित रहता है कर्म करता हुआ भी। बिना इस अनन्यता के कर्म बांधेगा ही। व्यक्ति सिद्ध-कर्ता नहीं बन सकता।

योगारूढ़ नैष्कर्म्य की अवस्था वाला व्यक्ति है। 18वें अध्याय के प्रसंग से तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है वहाँ 49वें श्लोक में कहा है –

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ॥18/49॥

'असक्त बुद्धिः सर्वत्र', वर्तमान श्लोक के पूर्वार्ध का अर्थ रखता है। प्रथम तथा दूसरा लक्षण इसमें घटते हैं। 'विगत-स्पृहः', 'स्पृहा रहित' तो 'सब संकल्पों का संन्यास' करने वाला ही होता है।

इस स्थिति की प्राप्ति के लिए सुझाव देते हैं, चेतावनी देते हैं और रास्ता बताते हैं आगामी श्लोकों में –

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥5॥
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥6॥

'अपने से अपने को उठाये, अपने से अपने को गिराये नहीं। अपना आप ही अपना बन्धु है और अपना आप ही अपना शत्रु है'॥5॥

'उसका अपना आपा-अपना बन्धु है जिसने अपने को अपने से जीता है। जिसने नहीं जीता उसका अपना-आपा ही अपने से शत्रु की तरह बरतता है'॥6॥

उठने का रास्ता किधर से होकर है? अपने को स्वयं ही उठाना होगा।

व्यक्ति के भीतर निम्न प्रकृति भी रहती है और उत्तम प्रकृति भी रहती है। उसके भीतर देवासुर-संग्राम चलता है। इस द्वन्द्व में कभी कोई प्रकृति विजयी होती है और कभी कोई। उत्तम प्रकृति की विजय में हम भला सोचते और भला करते हैं। निम्न प्रकृति के प्रभाव में कुत्सित विचार आते हैं। वैसे ही भाव हो जाते हैं और वैसे ही कर्म बन पड़ते हैं। व्यक्ति इन विचारों आदि के लिए खेलवाड़ बन जाता है, असहाय प्रतीत करने लगता है जब निम्न-प्रकृति का प्राबल्य होता है। काम, क्रोध, लोभ तथा मोह की आंधी आती है और वह परवश-सा उनके वशीभूत हो जाता है। विवेक को खो देता है। ऐसी आंधी आती है कि बुद्धि भी उस प्रकृति का अनुमोदन करती है और उसी के कार्य संवारने में रत रहती है। वह दौर समाप्त होता है, व्यक्ति सचेत होता है। फिर उत्तम प्रकृति का दौर आता है। पश्चात्ताप करता है। 'आगे से ऐसा नहीं करूँगा' ऐसा निश्चय करता है। परन्तु फिर वही कुछ होता है जो हुआ था। इस प्रकार से वह हताश हो जाता है।

ऐसी स्थिति में यह आदेश है –

अपने को अपने से उठाओ, गिराओ नहीं।

जो निराश हो जाता है, जो निम्न-प्रकृति से पराजय को स्वीकार कर लेता है वह उत्तरोत्तर पतित होता जाता है। जो हार नहीं मानता, उठने के लिए प्रयत्न करता है, वह कभी उठ जाता है।

विजय कैसे होगी? विवेक द्वारा। स्थिर हुआ विवेक हरा देगा निम्न प्रकृति को। कौन शत्रु है और कौन मित्र है। आसुरी प्रवृत्तियाँ व्यक्ति की शत्रु हैं। है तो वह भी व्यक्ति का आपा ही। उसी का तो अंश हैं जिसका अंश है दैवी-प्रकृति। पहचानना होगा कि अमुक वृत्ति आसुरी है, मेरी शत्रु है। उसका अनुकरण नहीं करना होगा। वह छलने की चेष्टा करेगी, रूप बदलकर भी आ सकती हैं, परन्तु सावधान रहना होगा। यदि इसको स्थान देते हो तो विकास के मार्ग से हटना होगा। सत्त्व की अपेक्षा तमस् में लीन होना होगा।

जब कोई भी वृत्ति जगती है तो उषाकाल की किरणों की भाँति कोमल तथा निर्बल होती है। यदि उसी समय हम उसे पहचान लें तो उसका इलाज हो सकता है। आसुरी-वृत्ति को ठीक समय पर पहिचान लेने से व्यक्ति उससे बच सकता है। उसका आधा बल तो पहिचाने जाने से ही समाप्त हो जाता है। पैदा होते ही शत्रु को शत्रु समझ लेने में ही कल्याण है।

व्यक्ति के आपे का एक अंश दैव है, सो मित्र है। विकास को मार्ग देता है। उसी आपे का एक अंश असुर है, वह विकास का बाधक है। इन दो में विवेक करके ही असुर का अतिक्रमण सम्भव है।

निराश होना गलत है। वास्तव में हम स्वामी हैं मन, बुद्धि तथा प्राण के। हमारा ही शासन यहाँ चलना चाहिए और चलेगा। हम अपने भाग्य के निर्माता हैं, चाहें तो विकासमार्ग में तेजी से चल सकते हैं और चाहें तो लुढ़क-पुढ़क सकते हैं। इसी सम्भावना को जानते हुए प्रोत्साहन दिया है। आदेश किया है, 'अपने को अपने से उठाए॥'

जो सोचता रहता है कि कोई दूसरा उसके लिए करेगा वह धोखे में रहता है। जो इस कार्य के लिए भी भगवान् की ओर आशा लगाये रहते हैं और जितना कुछ कर सकते हैं वह भी निकम्मेपन के कारण नहीं करते, भगवान् उनसे दूर ही रहते हैं। भगवान् हमें निकम्मा तो नहीं बनाना चाहते। उठने की चेष्टा भी तो व्यक्ति को

जगाती है। लड़ाई ही तो व्यक्ति और जाति को बनाया करती है। जो व्यक्ति को करने लायक दीखता है और जो वह इस आन्तरिक-विजय के लिए – आत्मोत्थान के लिए कर सकता है – वह करना ही चाहिए। ऐसा होने पर भगवान् की कृपा कमी को पूरी कर देगी, उत्तम प्रकृति की जय होगी।

किसका आपा अपना मित्र होता है? जिसने अपने को अपने से जीता है। मित्र वही जो हित साधे, जो सच्चा हो। संयत हुई मन-बुद्धि-इन्द्रियाँ हमारी मित्र हो जाती हैं। हमें स्वधर्माचरण करने देती हैं। तब शम सुगम हो जाता है। इनके द्वारा उत्पात नहीं होते।

जीता गया आपा तो सधे हुए घोड़े सा होता है जिसको हम जिधर चाहें ले जाएँ। वह हरी घास को देखकर चलने से इंकार नहीं करता। पानी को देखकर मचल नहीं जाता। वह हमारा सिद्ध मन्त्र है। विकास-मार्ग पर कदम बढ़ाने में परम सहायक है। शरीर साथ देता है और मन आदि योग देते हैं ऐसी अवस्था में। वह निम्न प्रकृति की प्रेरणा का शिकार नहीं हो पाता। पूरी तरह हमारे काबू में होता है। इसलिए, जिसने आपे पर अधिकार नहीं प्राप्त किया उसके लिए वह शत्रु बन जाता है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति एक विचार की निरर्थकता और हानिकारिता को जानता है। चाहता है कि वह विचार न आये, परन्तु वह बार-बार आता ही है। उससे विकलता होती है, परन्तु बुद्धि पर अधिकार न होने से वह उस विचार को छोड़ती ही नहीं। एक स्मृति दु:खदायी है। वह न होनी चाहिए, परन्तु बुद्धि उसे ही लादे चली जाती है। व्यक्ति का दिल बैठने लगता है। दिमाग चकराने लग जाता है। क्या बुद्धि का यह व्यवहार ठीक शत्रु का सा नहीं है? हमारी ही बुद्धि – जो आपे का एक अंश है – हमारा ही हनन कर रही है! यही हाल हृदय का होता है। किसी के प्रति घृणा होती है, उससे भीतर दाह होती है। हम चाहते हैं यह समाप्त हो जाये, परन्तु हृदय तो उसे ही जागृत रखता है। हमारी पीड़ा की उसे परवाह ही नहीं। यह व्यवहार भी शत्रु का सा ही तो है।

ठीक ऐसे ही न जीता हुआ प्राण करता है। काम-क्रोधादि वेग हैं जो शरीर को क्षीण करते हैं, परन्तु वह बार-बार जागृत होते हैं। हम चाहते हैं न हों, परन्तु प्राण तो उनके द्वारा होने वाली निजी तृप्ति को चाहता है। प्राण का यह स्वार्थमय व्यवहार शत्रु का सा है।

इन्द्रियाँ तो ऐसा करती ही हैं। खाकर पेट पिड़ाना तो आम बात है। रसास्वादन दु:खास्वादन हो जाता है। यह स्थूल शरीर भी जब सेवा के रास्ते में बाधा बनता है तो हमारा शत्रु हो जाता है।

जब बुद्धि, मन तथा प्राण साध लिए जाते हैं तो वह हमारे हित के लिए आचरण करते हैं। फिर यह मित्र हो जाते हैं। अपने स्वार्थ का यह हमारे लिए परित्याग करते हैं।

अत:, समझा जा सकता है आत्मसंयम कितना आवश्यक है। योगमार्ग में अग्रसर होना हो तो अपने पर काबू होना चाहिए।

अधिकार कैसे पाया जाता है? ऊपर कहा था विवेक से? उसका ढंग भी बताया था। साथ में ठीक समझ तथा विश्वास भी आवश्यक है। यह जान लेना चाहिए कि निम्न-प्रकृति अपने को स्वत: नष्ट करने वाली है। दैवी प्रकृति की विकासक्रम में विजय सुनिश्चित है और वह होगी ही, ऐसा दृढ़ विश्वास रखना चाहिए। प्रवृत्तियाँ धीरे-धीरे क्षीण होती हैं। जो एकदम से होता है सो दमन है। वह किसी भी क्षण फूट निकलेगा। नितान्त निवृत्ति तो संस्कार के क्षय से ही सम्भव होती है।

इसका उपाय है उत्तम-प्रकृति को पुष्ट करना। निम्न-प्रकृति को स्वीकार करना – इससे डरना नहीं, इसे पहचानना, इससे जूझना नहीं। विश्वासपूर्वक इस निम्न-प्रकृति को क्रमश: क्षीण होते हुए देखते जाना। जो व्यक्ति कर्म में रत रहते हैं, उनके संयम की समस्या सुगम हो जाती है। कर्म उनकी निम्न-प्रकृति को घिस-घिस कर साफ करता चला जाता है।

(क्रमश:)

गुरु वाणी

कमियाँ हम सभी में हैं, उनसे ऊपर उठने के लिये प्रयत्न करना तथा करवाना सर्वथा प्रशंसनीय है। (पत्र 78)

❖ ❖ ❖

अपनी वार्षिक आय का एक विशेष प्रतिशत अलग रख दिया करें और ऐसा समझें कि वह आपका नहीं है। (पत्र 79)

❖ ❖ ❖

भाव के आवेश को रोकना आवश्यक है। Sensitiveness से व्यक्ति बिना कारण के भी अपने को दु:खी कर लेता है। किसी घटना को दिल पर लगाना बिल्कुल निरर्थक होता है। जो व्यक्ति को करणीय है वह करने को तैय्यार हो जाये और व्यर्थ में दु:ख न करे, यही सौम्यता का मार्ग है, सुख का पथ है। जिस प्रकार से हम दूसरों के बारे में बातें करते हैं ऐसे ही दूसरों को भी अधिकार है। कोई व्यक्ति दूसरों की जिह्वा को नहीं रोक सकता। अत: कहे का बुरा मानना ही न चाहिये। (पत्र 80)

❖ ❖ ❖

क्रोध के प्रकट करने से, नफरत करने से लाभ नहीं होता किसी को भी। दूसरे, सभी विकास की भिन्न सीढ़ियों पर हैं; शायद आप भी कभी वैसे रहे हों। (पत्र 81)

❖ ❖ ❖

हमें ब्रह्मचर्य के महत्व को अपने अन्तस्थल पर खूब दृढ़ता से अंकित कर लेना चाहिए। आत्मिक तथा लौकिक कल्याण इसके बिना सम्भव नहीं है। इस बात को समझकर दृढ़ संकल्प करना चाहिए कि मैं इस व्रत का पालन करूँगी। इन भावों को विशेष अंकित करने के लिए सभी साध्वी स्त्रियों का, सीता तथा सावित्री जैसी देवियों के चरित्र का मनन करना चाहिए।

भगवान् से प्रार्थना करनी चाहिए कि प्रभो, हे जगजननी, हे माता, मुझे अपनी रक्षा में ले लो। मुझे बल प्रदान करो कि मैं अपनी पवित्रता को बनाये रखूँ। पतन के पथ से सदा दूर रहूँ। मुझे अपने में सच्चे विश्वास तथा श्रद्धा को प्रदान करो। भगवान् के सामीप्य को सदा प्रतीत करने का यत्न करो, भावना करो कि वह हमेशा आपके समीप हैं और रक्षा करते हैं।

अपने मन को शुद्ध रखने का सरल उपाय है कि काम करने में इतना व्यस्त रहना है कि और प्रकार के विचारों के लिए फुरसत न रहे। (पत्र 82)

❖ ❖ ❖

Letters to Seekers

Letter No. 20 : Shri Ram : Allahabad.

25.10.1944

My dear .....,

The efficacy of सदाचार (right conduct) and चित्त शुद्धि (purity of mind) in spirituality:–

We have to recognize the ideal and make effort to live up to it. The sadhna is the radical means to bring it about. If the mind is already clear of dross, there is not much need of sadhna. What good is medicine if the patient is free from disease. The higher a man proceeds in spirituality the purer and purer he becomes.

Note: In judging others we have to be cautious, because of the personal equation. The same behaviour will suggest different things to different persons.

'What am I?' That is your question. In reality what you are or what the ultimate truth is, you will realise when you are established in it. All attempts at description must of necessity be incomplete because of the inherent limitation of thought. From one point of view, I am (Akshar) अक्षर – the immutable, and as such I am all, I am Brahman, I am God. In another and a still higher aspect (to my mind), I am a ray of the indivisible Purshottam, manifesting as the universe. I shall give an illustration. There is a cone. It may be supposed to be comprised of numerous cones. In the apex, all cones are one, but in the body they are different – parts of a whole. In the plane of the अक्षर – (Akshar) (immutable) we are one, in the lower planes we are parts. That is how I understand. (Purshottam's is a Transcendental plane).

The spirit makes of mind, heart, sense-organs a vestibule of manifestation, and the latter again puts on a body to manifest in the physical plane.

Ultimately as I have already remarked this question will be solved when you have evolved into the higher planes and are established in the highest. I regard much thought upon this at the start unnecessary.

To establish yourself in Giana ज्ञान you have to perfect yourself and that comes through sadhana.

I know of no better way to still the mind than the name. It stills the heart, intellect and sense organs, gradually clearing away the hidden complexes connected with instincts.

विवेक (Vivek) is discrimination between good and evil. That which hinders my spiritual progress is evil and that which furthers it is good. The positive aspect of वैराग्य (Vairagya) is attachment (rather aspiration) for the goal. Negative aspect is the realisation that the transitory

experience of pleasure and pain, and worldly acquisitions are not ends in themselves. They are merely the conditions for evolution, and hence are not to be run after.

विवेक (Vivek) gives us a scale of values in life and वैराग्य (Vairagya) a burning aspiration for the Goal. Both are necessary.

Note: The higher sadhana clears up our vision and gradually induces both. We can help ourselves by thought upon these as well.

In realisation, there is no inspection, inter or extra अर्न्तमुखत्व अथवा बर्हिमुखत्व (Introversion or extroversion).

We are in an inner stillness which never leaves us. We can be perfectly active without while fully living in that. Thought as such has ceased long before.

During the sadhana, of course, a man is gradually accustomed to peep within – rather he is forced to do so. But this does not and should not interfere with his activity at all. Supreme Realisation does not mean sitting idle and thinking and thinking alone.

What is love? It is the spontaneous attraction of the self for the self. In its higher form it is the realisation of the unity in all. Its expression is selflessness or self sacrifice.

How to attain it? Ist Step: Look to the good in others and appreciate it. Interest yourself in others.

2nd Step: Try to help others – serve others – as best as you can. This will lead to gradually self forgetfulness. To really help others you will have to study the view point of others and identify yourself with it. This will give rise to sympathy and it will develop into love.

3rd Step: You will gradually realise that the one that lives in you lives in all. This will gradually establish you in Gyana (ज्ञान).

This is an essential part of spiritual sadhana. The inner sadhana should gradually induce this and this in its turn should help inner Sadhana.

I have tried to put down things plainly and practically.

Yours in the Lord,

Ramanand

❖ ❖ ❖

भागवत के मोती

गत वर्ष के अप्रैल अंक से पत्रिका में श्रीमद्भागवत के चुने हुए सन्देश छपने आरम्भ हुए हैं। इस अंक में प्रस्तुत है इन सन्देशों की छठवीं कड़ी –

26. प्यारे उद्धव ! वास्तव में जीव तो एक ही है – वस्तुत: मेरा स्वरूप ही है। आत्मज्ञान से सम्पन्न होने पर उसे मुक्त कहते हैं और आत्मा का ज्ञान न होने से बद्ध। और यह अज्ञान अनादि होने से बन्धन भी अनादि कहलाता है।

– भागवत 11.11.4

27. प्यारे उद्धव ! ज्ञान सम्पन्न पुरुष भी मुक्त ही है; जैसे स्वप्न टूट जाने पर जगा हुआ पुरुष स्वप्न के स्मर्यमाण शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं रखता, वैसे ही ज्ञानी पुरुष सूक्ष्म और स्थूल शरीर में रहने पर भी उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखता, परन्तु अज्ञानी पुरुष वास्तव में शरीर से कोई सम्बन्ध न रखने पर भी अज्ञान के कारण शरीर में ही स्थित रहता है।

– भागवत 11.11.8

28. यह शरीर प्रारब्ध के अधीन है। इससे शारीरिक और मानसिक जितने भी कर्म होते हैं, सब गुणों की प्रेरणा से ही होते हैं। अज्ञानी पुरुष झूठमूठ अपने को उन ग्रहण त्याग आदि कर्मों का कर्ता मान बैठता है और इसी अभिमान के कारण वह बँध जाता है।

– भागवत 11.11.10

29. जो समदर्शी महात्मा गुण और दोष की भेददृष्टि से ऊपर उठ गये हैं, वे न तो अच्छे काम करने वाले की स्तुति करते हैं और न बुरे काम करने वाले की निन्दा; न वे किसी की अच्छी बात सुनकर उसकी सराहना करते हैं और न बुरी बात सुनकर किसी को झिड़कते ही हैं।

– भागवत 11.11.16

30. जो पुरुष वेदों का तो पारगामी विद्वान् हो परन्तु ब्रह्मज्ञान से शून्य हो, उसके परिश्रम का कोई फल नहीं है। वह तो वैसा ही है जैसे बिना दूध की गाय पालने वाला।

– भागवत 11.11.18

31. दूध न देने वाली गाय, व्यभिचारिणी स्त्री, पराधीन शरीर, दुष्ट पुत्र, सत्पात्र के प्राप्त होने पर भी दान न किया हुआ धन और मेरे गुणों से रहित वाणी व्यर्थ है। इन वस्तुओं की रखवाली करने वाला दु:ख-पर-दु:ख ही भोगता रहता है।

– भागवत 11.11.19

32. यदि तुम अपना मन परब्रह्म में स्थिर न कर सको तो सारे कर्म निरपेक्ष होकर मेरे लिये ही करो।

– भागवत 11.11.22

साधना परिवार की विभूतियाँ

पूज्य स्वर्गीय श्री सूर्यप्रसाद जी शुक्ल 'रामसरन'

जीवन परिचय एवं कुछ प्रेरणादायक घटनायें

द्वितीय भाग

स्वामी जी का चमत्कार

एक दिन पीलीभीत में स्वामी जी की अध्यक्षता में सत्संग हो रहा था जिसमें सभी मालिक परिवार सहित तथा नगरवासी उपस्थित थे। मन्दिर के पुजारी ने प्रसाद के लिये लड्डू यह सोचकर कम मंगाये थे कि शहर में कर्फ्यू लगा होने के कारण लोग कम आयेंगे, परन्तु भक्तों की संख्या अनुमान से कहीं अधिक हो जाने के कारण पुजारी घबड़ाये कि मालिक नाराज़ होंगे। हलचल हुई तो स्वामी जी ने कारण पूछा। पता लगने पर स्वामी जी ने अपना तौलिया प्रसाद पर ढकवा दिया और सत्संग समाप्त होने पर प्रसाद वितरित करने का भार अपने ऊपर ले लिया। स्वामी जी ने सभी को चार चार लड्डू दिये और अन्त में उनके अपने लिये भी चार लड्डू बचे रहे। ऐसा था चमत्कार स्वामी जी के भगवान् पर विश्वास का।

स्वामी जी की आप पर कृपा

स्वामी जी जब भी पीलीभीत आते थे तो आपके घर अवश्य जाते थे और वहाँ जाकर जैसे अन्य बच्चे रहते थे वैसे ही हो जाते थे। चाची जी से पूछते कि आज क्या खिलाओगी और बार-बार बच्चों की तरह रसोई घर में झाँक लेते थे। छोटे बच्चों जैसा व्यवहार करने लगते।

एक बार स्वामी जी का पीलीभीत का कार्यक्रम बना जिसकी जानकारी सबको हो गई थी किन्तु किसी दूसरी जगह का कार्यक्रम बनने के कारण स्वामी जी ने आपको पत्र भेज दिया कि हम न आ सकेंगे। इसे पढ़कर आपको बहुत दु:ख हुआ और दुखी होकर एक कविता लिख कर स्वामी जी को भेज दी। स्वामी जी ने कविता पढ़ी तो इतने द्रवित हो गये कि दूसरी जगह का कार्यक्रम रद्द करके पीलीभीत आ गये।

पूज्य स्वामी जी आपकी साधना से इतने प्रभावित थे कि दूसरे साधकों को उनका उदाहरण दिया करते थे। एक साधक के पत्र का उत्तर देते हुए पूज्य स्वामी जी ने भीलवाड़ा से दिनांक 15.8.1951 को लिखा था कि 'यदि आप यह देखना चाहें कि गृहस्थ कैसे साधनामय हो सकता है तो पीलीभीत जाकर शुक्ल जी को देख आइयेगा। वह वहाँ शुगर फैक्ट्री में चीफ केमिस्ट हैं।'

साधकों पर स्वामी जी की विशेष कृपा

पूज्य स्वामी जी महाराज की एक आदत थी, वे साधकों का दु:ख नहीं देख पाते थे और हर प्रकार का कष्ट मिटाने को तत्पर रहते थे। एक बार वे अपने शिष्यों से मिलने फर्रुखाबाद गये। जब सबसे कुशलक्षेम पूछी तो एक साधक ने अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहा कि स्वामी जी बेटी का विवाह नहीं हो पा रहा है। ब्राह्मण परिवार का लड़का ही नहीं मिल रहा। स्वामी जी जब पीलीभीत जाते थे तो श्री शुक्ल जी के लड़कों को देखते थे। स्वामी जी ने श्री शुक्ल जी के बेटे श्री कृष्ण कान्त का विवाह उपरोक्त साधक के बेटी से करा दिया। ऐसे ही न जाने कितने ही लोगों का उपकार स्वामी जी ने किया।

सन् 1968 में शुक्ल जी की धर्मपत्नी के पैरों में गैंगरीन का रोग हो गया जिसमें पैर काटने की नौबत आ गई थी। आप स्वयं हृदय रोग से पीड़ित थे और अभी पूरी तरह स्वस्थ भी नहीं हुए थे। यह सोच-सोच कर व्यथित हो रहे थे कि पैर कट जायेगा तो यह कैसे चलेंगी, क्या होगा। जब अस्पताल में भर्ती होने जा रही थीं तो उनको लगा जैसे स्वामी जी उनके साथ चल रहे हैं। भोजन कोई भी दे जाता था। वहाँ अपने पैरों से चलकर सारा काम कर लेती थीं और अपने पलंग पर बैठकर अन्य रोगियों के साथ सत्संग करती रहती थीं। लेखक श्री प्यारेलाल भारती जी नित्य प्रति अस्पताल देखने जाते थे तो वहाँ स्वामी जी की प्रत्यक्ष अनुभूति होती थी। कुछ दिनों के बाद औषधि लगाने से ही गैंगरीन ठीक हो गई, पैर काटने की आवश्यकता नहीं पड़ी और अन्त समय तक यह रोग फिर कभी नहीं हुआ।

जब मुसीबत आती है तो अकेले नहीं आती है। श्री शुक्ल जी के पुत्र मुरारी कान्त की स्त्री की मृत्यु सन् 1965 में ही हो चुकी थी। घर में तीन छोटे बच्चे थे, इनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। ऐसी संकट की घड़ी में शुक्ल जी को सन् 1968 में ही पक्षाघात हो गया था जिसके कारण उनका उठना बैठना, हाथ पैर हिलाना भी दूभर हो गया था। एक बार हर्ष बहन जी और प्यारेलाल भारती जी उनके पास उपस्थित थे। ऐसा लगने लगा था कि जैसे उनका अन्त समय आ गया है। आपने अपनी हस्तलिखित सत्संग के प्रसाद की कापियाँ हम दोनों को सौंपनी शुरु कर दीं। ऐसा करते समय हम तीनों लोग रो रहे थे। कापियाँ देने के बाद कहने लगे कि हमारी इच्छा है कि सत्संग बराबर चलता रहे।

उसी समय 5 नवम्बर 1968 की रात्रि में आपको स्वप्नावस्था में चेतावनी हुई जो कविता के रूप में थी। प्यारेलाल जी प्रतिदिन सुबह आपको देखने जाते थे। जब 6 तारीख की सुबह को पहुँचे तो कहा कि बेटा, स्वप्नावस्था में जो चेतावनी हुई है वह हमें अभी याद है, उसे तुम लिख लो। मैं लिख नहीं सकता हूँ क्योंकि मेरे हाथ काम नहीं कर रहे हैं। प्यारेलाल जी ने आज्ञा का पालन किया। जो कविता उन्होंने लिखवाई वह इस प्रकार है :-

प्यारे पीछे जनि पछिताना।
स्वर्ण सुअवसर जाय रह्यो है,
पल को नाहिं ठिकाना।
आजु कालि के हेर फेर में,
है स्वदेश को जाना॥
अस जिय जानि छाँड़ि निज भ्रम
सब भजिले श्री भगवाना।
सत पथ पकरि धरम धरि चित सों
तजिदे अब अभिमाना॥
जीवन का सुखसार यही है,
कहिगे सन्त सुजाना।
तिनहीं लह्यो जनम फल जग में,
जिन यह तत्व पिछाना॥
रामसरन बीती सो बीती,
आगे अब न नसाना।
पावन प्रीति लगाय निरन्तर
हरि को नाहिं भुलाना॥

इसी बीमारी में आपको देखने श्री ज्योति प्रसाद जी सूद व श्री उमा दत्त जी लड़ोइया मेरठ वाले आ गये। उस समय आप उठ-बैठ भी नहीं सकते थे। अन्दर कमरे में पड़े रहते थे। अतिथियों के भोजन के समय आपको भी बाहर तख़्त पर मसनद लगाकर बैठाया गया। गुरुदेव भगवान् की ऐसी कृपा हुई कि कहाँ तो हाथ काँपते थे, बैठ भी नहीं सकते थे (ऐसे अवसर पर ऐसा चमत्कार हुआ कि चम्मच से थोड़ा भोजन किया और उसके बाद बड़े कमरे में सत्संग हुआ जिसमें आप लगभग डेढ़ घंटा बैठे रहे।) बस उसी दिन से सेहत में सुधार होने लगा और धीरे-धीरे आप पूर्ण स्वस्थ हो गये। आप, सूद जी और लड़ोइया तीनों ही परम मित्र और गुरुभाई जो थे।

एक अन्य घटना

1 मई 1975 को आपका छोटा पुत्र श्री मुरारी कान्त, जिसकी आयु उस समय लगभग 40 वर्ष की थी, अपने मकान की स्लैब डलवा रहा था और उसके निरीक्षण के लिये पड़ोस के मकान के तिमंजिले छज्जे पर खड़ा था कि अचानक 3 फुट चौड़ा और 10 फुट लम्बा छज्जा टूट गया और मुरारी कान्त नीचे सड़क पर गिर पड़ा। उसके ऊपर छज्जे का सारा मलबा आ गिरा, परन्तु मुरारी कान्त को साधारण खरोंच आदि के अतिरिक्त कोई विशेष चोट नहीं आई। यहाँ तक कि घड़ी, चश्मा भी नहीं टूटे। इतने में न जाने कहाँ से दो नवयुवक डॉक्टर आ गये और उनका प्राथमिक उपचार कर दिया। जब उनको फीस देने लगे तो कहा कि क्या यह हमारा भाई नहीं है? पता नहीं भगवान् ने कहाँ से ऐन मौके पर उन्हें भेज दिया। श्री मुरारी कान्त की माँ शहर से 12 मील दूर रामनगर में थीं। जब उन्हें स्कूटर से आदमी लेने गया और गिरने का हादसा बताया तो उन्होंने कहा कि चलो हम स्वयं आ जायेंगी। हमें मालूम है कि सब ठीक है, स्वामी जी आकर हमें सब बता गये हैं। जब घर आयीं तो इस बात की पुष्टि हो ही गई।

एक अन्य घटना में पीलीभीत शुगर मिल में एक दिन लोहे की सीढ़ी पर चढ़कर इनका पैर फिसल गया और जैसे ही गिरने लगे तभी आपका कोट सीढ़ी की कील में फँस गया। पीछे चपरासी था, उसने आपको पकड़ लिया। सीढ़ी के नीचे गन्ने का रस खौल रहा था, यदि गिर जाते तो तुरन्त जलकर मृत्यु हो जाती। उस समय आपका वजन लगभग ढाई-तीन मन (80-100 किलोग्राम) था। भगवान् की कृपा से बच पाये।

इसी प्रकार की एक और घटना हुई थी। एक दिन आप फैक्ट्री में देखभाल कर रहे थे कि तभी चिमनी के चारों ओर लोहे का बन्ध जो कि चिमनी की मज़बूती के लिये लगाया जाता है, एकाएक टूट कर गिर गया और आप उसके घेरे में फँस गये, परन्तु भगवान् की कृपा से आपको ज़रा भी चोट नहीं आई।

तीर्थ यात्रा

जब आपको पता लगा कि स्वामी जी की स्पेशल ट्रेन तीर्थ यात्रा को जा रही है तो इन्होंने तुरन्त धनराशि भेज कर सीट रिज़र्व करा ली और सपत्नीक सारे भारत का तीर्थाटन किया। भाग्य से आपके गुरुभाई बहन श्री ज्योति प्रसाद जी सूद व श्री उमादत्त जी लड़ोइया, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अमरदेवी लड़ोइया, मेरठ तथा श्रीमती रामेश्वरी (दीदी), आगरा भी उसमें साथ थे। तीर्थयात्रा ट्रेन में स्वामी हीरानन्द जी, स्वामी अखण्डानन्द जी, स्वामी शुकदेवानन्द जी, स्वामी भजनानन्द जी तथा अन्य कई महात्मा थे। पूरे भारत में उन सभी सन्तों का भव्य स्वागत हुआ, भोजन और आवास आदि की सुन्दर व्यवस्था थी। जब यह ट्रेन बैंगलोर पहुँची तो अन्य स्थानों की तरह यहाँ भी सार्वजनिक सभा में सबका स्वागत किया गया। सभी तीर्थ यात्रियों को अपना-अपना परिचय देना था। जब आपकी बारी आई तो स्वामी शुकदेवानन्द जी ने कहा कि इनका परिचय हम देंगे। इतना कहकर परिचय देते हुए कहा कि यह एक ऐसे सन्त के शिष्य हैं जिनका समकक्ष इस युग में नहीं है।

चूँकि उत्तर भारत की तीर्थ यात्रा उस समय नहीं हो सकी थी, इसलिये सन् 1967 में साधना धाम कनखल से श्रीमती सुमित्रा माँ की संरक्षता में लगभग 20 साधक भाई बहनों ने बद्रीनाथ धाम की यात्रा बस द्वारा की। भगवान् के दर्शन व आरती आदि समीप से करने का सौभाग्य प्राप्त किया। वहाँ के अधिकारियों ने आप सबका बड़ा सम्मान किया और सारी सुविधायें दीं। चूँकि सभी बही बहिन गुरुभाई थे, इसलिये खूब आनन्द मिला और खूब भगवान् की कृपा बरसी।

सन्त महात्माओं से मिलन

पीलीभीत में रहते समय भी अनेक सन्त महात्मा आया करते थे जिनका सत्संग व आशीर्वाद आपको मिलता रहता था, परन्तु नौकरी छोड़ने के बाद आप अधिकतर परमार्थ निकेतन में ही रहने लगे थे। वहाँ स्वामी शुकदेवानन्द व स्वामी भजनानन्द जी की आप पर बड़ी कृपा थी। वहाँ पर दोनों ने वानप्रस्थ ले लिया था और वहाँ रहकर साधन-भजन करते रहते थे। स्वामी शुकदेवानन्द इनसे अधिक प्रभावित थे। इसलिये स्वामी जी ने मूर्तियों के पास जो गोलकें रखी रहती थीं, उनके खोलने की जिम्मेदारी आप पर छोड़ दी। पहले कुछ गड़बड़ी होती थी, इनके खोलने पर पैसा अधिक निकलने लगा। आपने वहाँ के रहने वालों का एक स्वयंसेवक दल तैयार किया जो कि आश्रम की सफाई आदि की व्यवस्था करता था।

वहाँ पर आपको भगवान् शंकर व माता पार्वती के तथा सिद्ध महापुरुषों के साक्षात् दर्शन हुए थे। एक दिन अपने कमरे में ध्यान करने बैठे तो ऐसा लगा कि जैसे हमारे चारों ओर बड़े-बड़े बाल व दाढ़ी वाले कुछ लोग बैठे हैं। इन्हें डर लगा तो सुबह स्वामी शुकदेवानन्द जी से कहा कि स्वामी जी हमारा कमरा बदल दीजिये क्योंकि इस कमरे में प्रेतात्माएँ रहती हैं जो हमें डराती हैं। स्वामी जी ने सब बातें पूछीं तो जानकर बड़े प्रसन्न हुए और कहा कि शुक्ल जी आप बड़े भाग्यशाली हैं। ये प्रेतात्माएँ नहीं हैं, ये तो सिद्ध पुरुष हैं जो आपको ध्यान भजन करते देख कर प्रसन्न होते हैं और आपको प्रगति देने के लिये आपके पास आते हैं। तब से आपका भय छूट गया और भजन में तीव्रता आ गई।

एक बार परमार्थ निकेतन में ही जब आप सुबह प्रार्थना सभा में जाने के पहले सर्वेश्वर मन्दिर में दर्शन करने गये तो आपको साक्षात् भगवान् शंकर व माता पार्वती जी के दर्शन हुए। आप ध्यानस्थ हो गये। बाद में प्रणाम करके आशीर्वाद प्राप्त किया। आपके साथ उस समय हर्ष बहन जी भी थीं जिनको आपने यह सब बताया था।

जब सन् 1961 में कनखल में साधना धाम बन गया तो आप दोनों जगह थोड़े-थोड़े दिन रहने लगे। परन्तु जब शारीरिक कमज़ोरी अधिक आ गई तो फिर साधना धाम में ही रहने लगे, परमार्थ निकेतन जाना बन्द हो गया।

आप महात्मा गाँधी के विचारों का बड़ा आदर करते थे। जब कभी गाँधी जी कानपुर आते थे तो आप कानपुर आकर उनके दर्शन करते तथा प्रार्थना सभा में सम्मिलित होते थे। आपने गाँधी साहित्य का अध्ययन किया था। आपने कानपुर में अनेक सत्संग केन्द्रों की स्थापना की ताकि अधिक से अधिक साधकों को सुगमता पूर्वक पूज्य गुरुदेव की शिक्षा का लाभ प्राप्त हो सके और वे अपने को धन्य कर सकें।

आप अधिकतर खद्दर का ही प्रयोग करते थे। आपको कविता से बड़ा प्रेम था; हमेशा भजन लिखा करते थे। श्री गुरु महाराज की उन पर इतनी कृपा थी कि वह रात को दो बजे उठकर भजन रचना किया करते थे। उनकी समस्त काव्य रचना एक ही शैली की है जिसमें उन्होंने 108 भजनों की रचना की। ये भजन **'श्री राम भजन माला'** नामक पुस्तक में संग्रहित हैं। उन्हीं में से एक भजन नियमित रूप से **'हमारी साधना'** पत्रिका में प्रकाशित होता है। आपने कई नोट बुकें सत्संग प्रसाद के नाम से लिखी हैं जो कानपुर सत्संग में अभी तक बड़े आदर के साथ पढ़ी जाती हैं।

आपने स्वामी रामानन्द जी की पुस्तकें 'गीता विमर्श', 'अध्यात्म विकास', 'आध्यात्मिक साधन – भाग 1 व 2' को सरल एवं सबके समझने योग्य भाषा में लिखा है।

(क्रमशः)

बचे रहियेगा

गुरु महाराज का दुर्लभ लेख (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)

जिस जीवन में अभी तक आगे बढ़ने की लालसा जागृत नहीं हुई, जो वर्तमान से ऐसे सन्तुष्ट हैं कि भविष्य की उज्ज्वल सम्भावनाएँ ही उनमें नहीं जगती हैं; वह या तो अभी पूरी तरह से मनुष्य ही नहीं बना है – पशु है, अथवा मनुष्य भाव का अतिक्रमण कर चुका है। पशु में प्रगतिशीलता नहीं होती। वह अपनी परिस्थिति में ऐसे ठीक जमा होता है कि उसके अतिक्रमण के लिए अन्तरुद्वेलन नहीं दीखता है। और सन्त ने उस शक्ति शान्ति को लाभ किया होता है कि उसके लिये पाने को कुछ नहीं रहता, वह तो सच्चिदानन्द प्रभु से युक्त रहता है। मनुष्य में वर्तमान के सतत् अतिक्रमण की लालसा होनी स्वाभाविक है। यही उसे मनुष्य भाव से परे ले जाती है और सदैव के लिये शान्त व कृतकृत्य कर सकती है।

जिस व्यक्ति में बदल जाने और बदल डालने की इच्छा जितनी प्रबल होती है, वह उतनी ही तेज़ी के साथ आगे बढ़ पाता है। तमोगुण की जड़ता इस इच्छा को कम कर देती है; सत्वगुण के कारण हो जाने वाला परिस्थिति से सन्तुलन एक सुख और सन्तोष को जागृत कर देता है। सत्वगुण से भीतर एक शान्ति की अनुभूति होती है। ऐसे व्यक्ति के लिये परिस्थिति भी सुखद हो जाती है, व्यक्ति चैन से टिका रहना चाहता है। परन्तु यह हालत व्यक्ति को रोके रहती है। रजोगुणी व्यक्ति अपनी तड़प की तीव्रता के कारण आगे निकल जाते हैं। वह सत्व का सम्पादन करते हुए भी रजोगुण की क्रियाशीलता के कारण रुक नहीं पाते।

साधक को सावधान रहना चाहिये तमोगुण से जो पाले की तरह व्यक्ति पर गिरकर उसे ठण्डा कर सकता है, मन और तन, दोनों को ही क्रियाहीन कर सकता है। साधना में अच्छी प्रकार से चले न जाने तक इसका आक्रमण बार-बार सम्भव है। व्यक्ति पथ से भ्रष्ट हो जाता है, भूल जाता है और कभी सो भी जाता है। प्रतिकूल संस्कार उसकी मति को गंदला भी कर सकते हैं। भीतर से सुखेच्छा उसे फुसलाया भी करती है, 'अभी नहीं – अभी क्या जल्दी है? समय आने दो।' ख़बरदार रहियेगा, इन चोरों को मित्र न समझियेगा, इन सुझावों से बहक न जाइयेगा! तमोगुण अफ़ीम के नशे की तरह जीवन की सभी गतियों को मन्द कर देगा।

दूसरा और अधिक सूक्ष्म ख़तरा है सत्वगुण की आसक्ति का। व्यक्ति में परिवर्तन होता है, परिस्थिति में परिवर्तन होता है। व्यक्ति अभूतपूर्व सुख तथा शान्ति का अनुभव करने लगता है, उसकी व्यथाएँ बीतने लगती हैं, उसकी दृष्टि सामने दूरी पर, ऊँचे पर स्थित लक्ष्य से हटकर अपने दायें-बायें परिस्थिति पर अटक जाती है, वह सुख, शान्ति और आनन्द की आन्तरिक अनुभूति उसकी लालसा का हनन कर डालते हैं, वह सुख में सोने लगता है, आगे चलना बन्द हो जाता है।

हमें इन खतरों से बचना होगा, परन्तु कैसे? जागरूक रहने से। जागरूक रहने से हम तमोगुण को पहचान सकते हैं और सत्व के राग को भी। उसका निराकरण कर सकते हैं विचारशीलता से। परन्तु मैं जानता हूँ उस परिस्थिति को भी जहाँ हम आते हुए खतरे को जानते हैं परन्तु चाहते हुए भी कुछ कर नहीं पाते। हम आते हुए तूफ़ान को देखते हैं परन्तु चाहते हुए भी भाग नहीं पाते। संकल्प की शक्ति जगती ही नहीं, क्रिया होती ही नहीं। बार-बार यह तूफ़ान आता है और हम बह जाते हैं। तमोगुण का

झोंका आता है और हमें ग़ायब कर देता है। जब जानते हैं और सोचते हैं तो पुकार उठते हैं – 'हाय, क्या करें? मेरा बस नहीं चला।' यह स्थिति सचमुच घटती है कई एक साधकों पर।

ऐसे में उस परमशक्तिमयी माँ का सहारा लो – हृदय को ही पुकारने दो, 'बहुत हो लिया माँ, अब तो सतत स्मृति दो अपनी और अपनी समीपता की। अब तो ऐसी लगन लगा दो कि तुमसे पल भर भी विलग न हो पाऊँ, तेरे पावन पथ से मेरे पैर न डगमगा पायें। निज सामर्थ्य मुझमें है नहीं, वह तो समय पर बेकार होता है। तू ही मेरा सामर्थ्य है माँ, तू ही मुझे ले चल –

डगमगाएँ पैर मृदु लचके कोमल गात।
निज पथ पर कर पकड़ कर ले चल मुझको मात॥

यह पुकारते रहो। पुकार गहरी हो जाये, तुम्हारे रोम रोम में धंस जाये और हृदय का क्रन्दन बनकर माँ तक पहुँच जाये। फिर सभी कुछ हो जायगा।

– रामानन्द

❖ ❖ ❖

ईश्वर, आत्मा और प्रकृति

(पुरानी पत्रिका से उद्धृत)

सुश्री महादेवी वर्मा कहती हैं –

सिर नीचा कर किसकी सत्ता,
सब करते स्वीकार यहाँ।
सदा मौन हो प्रवचन करते
जिसका, वह अस्तित्व कहाँ?

जिसका अन्त ही नहीं, उसे पूरी तरह जान कौन सकता है; और जो हर स्थान पर है, हर वस्तु में है, उसके सम्बन्ध में कौन कह सकता है कि मैं उसे जानता नहीं? इसीलिये ईशोपनिषद् में स्पष्ट शब्दों में कहा है – 'जो कहता है कि मैं उसे नहीं जानता हूँ, वह गलत कहता है, और जो कहता है कि मैं उसे जानता हूँ, वह भी गलत कहता है। दोनों ही नहीं जानते कि वे क्या कह रहे हैं। ईश्वर में रहते हुए भी जो कहता है कि मैं उसे नहीं जानता, वह उसी मछली की तरह है, जो सागर में तैर रही हो और कह रही हो कि मैं पानी को नहीं जानती – मैं प्यासी हूँ। इसी पर कबीर जी कहते हैं –

पानी में मीन प्यासी, मुझे देखत आवे हाँसी।

और ईश्वर में रहते हुए भी जो दावा करता है कि वह ईश्वर को पूरी तरह जानता है, वह उस चिउंटी की तरह है, जो हिमालय की किसी गुफा में रेंगती हुई दावा करे कि मैं हिमालय को जानती हूँ। इसी विषय में कबीर जी कहते हैं –

सब धरती कागद करूँ, लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय॥

कहने का अभिप्राय यह है कि सात समुद्रों की स्याही बनाकर जंगल के सारे वृक्षों को कलमें बनाकर इस पृथ्वी को कागज बनाकर यदि लिखा जाये तो भी श्रीहरि के गुणों का पूरा बखान करना अति कठिन है।

यह सब कुछ जो दीखता है या सूझता है, समझ में या अनुभव में आता है, मैं, आप, दूसरे लोग, पशु, पक्षी, हरे खेत, झरती हुई नदियाँ, ऊँचे-ऊँचे पहाड़, चन्द्रमा, आकाश, ग्रह, सूर्य और उनसे भी परे सब कुछ का एक मात्र आधार है वह चेतन सत्ता जो तीन रूपों में प्रगट है – ईश्वर, आत्मा और प्रकृति।

प्रकृति का गुण यह है कि वह है, जैसे गीली मिट्टी का ढेर है। हम उसे किसी भी रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। सोना भी वही है, लोहा और आग भी वही है। उसका अपना कोई रूप

नहीं, अपना कोई नाम नहीं। उसके लिये न सुख है न दु:ख। आत्मा के दो गुण हैं। पहला यह कि वह है, जैसे प्रकृति है; दूसरा यह कि वह जीवित है – सुख और दु:ख दोनों को समझता है, इच्छा भी करता है, आशा भी। ईश्वर में तीन गुण हैं – पहला यह कि वह है, जैसे प्रकृति है, दूसरा यह कि वह जीवित है, ज्ञानवान है, शक्तिमान् है, जैसे आत्मा और तीसरा यह कि वह आनन्द से भरपूर है – स्वयं ही आनन्द रूप है। दूसरे शब्दों में –

प्रकृति 'सत्' है।

आत्मा 'सत्' और 'चित्' है।

ईश्वर 'सत्' 'चित्' और 'आनन्द' है।

परन्तु इतनी बात सुन लेने पर भी हमारे सन्देह बने रहते हैं। कुछ लोग प्रकृति को ही सब कुछ मानते हैं। कुछों के मत में आत्मा परमात्मा का एक अंश है, जो प्रकृति के चक्कर में फंस गया है, और कुछ लोगों के मतानुसार 'आत्मा' सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् है। वास्तव में आत्मा न तो प्रकृति है, न ईश्वर है। यदि वह ईश्वर होता तो उसे कभी दु:ख का अनुभव न होता क्योंकि ईश्वर तो आनन्द स्वरूप है। यदि वह प्रकृति (जड़) होता तो उसे सुख और दु:ख का अनुभव ही न होता।

अब यह प्रश्न शेष रहता है कि 'ईश्वर क्या है?' उपनिषद् और वेद में नचिकेता की कहानी आती है। नचिकेता के पिता ने उसे यम के पास भेजा। यम के घर पहुँच कर वह तीन दिन भूखा प्यासा बैठा रहा। यम बाहर से वापिस आये तो भूखे अतिथि को अपने द्वार पर पाकर अफसोस किया; प्रायश्चित करने के लिये वे बोले – 'मैं तुम्हें तीन वर देता हूँ, जो मांगोगे वही मिलेगा'। नचिकेता ने पहले वरदान में अपने पिता की प्रसन्नता मांगी। दूसरे में अपनी माता की दीर्घायु के लिये कामना की और तीसरे में यह जिज्ञासा की कि भगवान् का स्वरूप क्या है? यम ने कहा, 'तूने अपने लिये कुछ नहीं मांगा। मैं तुझे सब कुछ दे सकता हूँ – सारी पृथ्वी का राज्य, अनन्त धन, अक्षय यौवन, सुन्दरता, प्रभुता आदि'। नचिकेता ने कहा, 'यह सब कुछ मुझे नहीं चाहिए, क्योंकि यह सब कुछ नष्ट होगा। मुझे अविनाशी ब्रह्म-ज्ञान चाहिए।' यम के बार-बार जोर देने पर भी जब नचिकेता ने अपना हठ नहीं छोड़ा, तब यम ने समझाना आरम्भ किया कि प्रकृति क्या है, किसकी शक्ति से वह रूप बदलती है। आत्मा क्या है, किसकी शक्ति से वह शक्तिवान बनता है। सब कुछ सुनने के पश्चात् नचिकेता ने कहा, 'लेकिन मैं तो ईश्वर का रूप जानना चाहता हूँ, जिसकी शक्ति से यह सब कुछ प्रकाशित है'। यम ने उसके हठ को देख चिल्ला कर कहा, 'चुप रह बच्चे! यदि इससे आगे पूछेगा तो तेरा सिर कट जायेगा।' यह केवल एक कहानी है, किन्तु इसका तात्पर्य यह है कि आत्मा के लिये, चाहे वह मनुष्य के रूप में हो या किसी और रूप में परमात्मा को उसके पूरे रूप में देखना असम्भव है। परमात्मा अपार है और आत्मा संकुचित है।

ईश्वर का पूरा रूप न कभी वर्णित किया गया है और न किया जा सकेगा। आत्मा उसे केवल अनुभव कर सकती है। वह भी उस समय जब वह अपनी शुद्ध अवस्था में हो। तुलसी जी ने कहा है –

''निर्मल मन जन सो मोहि पावा''

तभी भक्त और योगी अपने अनुभव के अनुसार कहते हैं –

ईश्वर अनन्त है, असीम है, सर्वशक्तिमान है, आनन्द का भण्डार है, न्यायकारी है, कल्याणकर्त्ता है, शंकर है, आदि।

माया दीन दयाल की, दीखत है चहुँ ओर।
मेरा जग में कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर॥

– उर्मिला सहगल

एक अनोखा बन्धन

(पुरानी पत्रिका से उद्धृत)

दिनांक 15.4.1962 के पुण्य पर्व पर श्रद्धांजलि के कार्यक्रम से, हमारा इस वर्ष का साधना शिविर प्रारम्भ हुआ। इस वर्ष कुम्भ मेले की धकापेल के भय से कुछ लोग न आ सके। श्रद्धांजलि के समय पर कोई तीस व्यक्ति ही सम्मिलित हो सके। यथा नियम कार्य सम्पन्न हुआ और सायंकाल शिविर प्रारम्भ हो गया।

गुरुदेव के द्वारा नियत समयानुसार पाँच दिन, पाँच रात्रि का शिविर भागीरथी के पावन तट पर बरसते हुए कृपा कणों द्वारा सब हृदयों में शान्ति और प्यार का संचार करते हुए अपनी पूर्णता को प्राप्त हुआ। निस्सन्देह यह एक अपूर्व समय था। 12 वर्षीय पवित्र कुम्भ का पर्व, गुरुदेव की दशाब्दि, साधना धाम में प्रथम सत्संग का समागम, श्री रामायण का सम्पुट अखण्ड पाठादि सब आनन्द बरसाने वाले साधन एक ही काल में एकत्रित हो गये। अद्‌भुत थे ये दिन, अद्‌भुत थी उसकी कृपा-वृष्टि।

नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।

मस्त हस्ती की भाँति झूमते हुए सब साधक एक अवस्था का अनुभव कर रहे थे।

उस पवित्र समय में मैंने अनुभव किया कि ऐसे आनन्दप्रद अवसर पर कुछ अभाव अखर रहा है। हृदय रह-रह कर किन्हीं स्मृतियों में खोता जा रहा है। अनजाने अनचाहे ही आँखें किसी प्रतीक्षा में द्वार पर लगी रहतीं। हृदय में कुछ धीमी-धीमी कसक होती; भीतर से कुछ शिकवा बनता, कुछ क्रोध आता पर निराशा भरी कसक में सब लय हो जाता। अन्तिम दिन तक यही दशा बनी रही।

क्या था और क्यों था यह सब?
चैन में बेचैन कौन कर रहा था?
क्यों हृदय अधीर था?
क्यों मंगल में अमंगल सा लग रहा था?
कौन तड़पा रहा था मुझे –
एक अनोखा बन्धन, जो वह बाँध गया है–
वही दिव्य-प्यार की जंज़ीरें
जिसमें वह कस गया है
जीवन की वीणा को।
रह-रह कर अपने प्यारे भाई बहिनों की गहरी याद,
उन का अभाव,
अधीर कर रहा था हृदय को।
सब कुछ पाने पर भी
कुछ खोया-खोया सा लगता था,
कुछ अधूरा सा लगता था।

धीरे-धीरे एक अटल सत्य समझ में आने लगा। हम जिस पथ के पथिक हैं जो अनोखा साधन पथ हमें मिला है उसका ही यह अनूठा प्रसाद है कि हम कभी किसी दशा में भी एक दूसरे से विलग नहीं हो सकते। उस दिव्य निर्माता ने यह दिव्य प्यार की एक ऐसी दिव्य दुनियाँ बसाई है जिसमें एक बार बस जाने वाला इसे छोड़ न सकेगा।

साकी अवल तो तेरे कूँचे में,
कोई आ नहीं सकता।
पर कानूने हक़ है,
जो आयेगा जा नहीं सकता॥

हमें एक दूसरे पर गिले होते हैं, शिकायतें बनती हैं; हम रूठते हैं, मनाते हैं पर क्या हम बिलग हो पाते हैं? जिस पर प्यार होता है उसी पर गिला बनता है। रूठना और मनाना – यह प्यार का जीवन है। यह दैवीय प्यार की मूक व्याख्या है।

बालि को भगवान् पर क्रोध आया, तीर जो खाया था अपने प्यारे से। झुंझलाहट हुई – छूट रहा था संसार, मुँदती हुई आँखें उस प्यारी मूर्ति को खो रही थी। वह गिला करने लगा –

हृदयँ प्रीति मुख बचन कठोरा।
बोला चितइ राम की ओरा॥
धर्म हेतु अवतरेहु गुसाईं।
मारेहु मोहि ब्याध की नाईं॥

मैं बैरी सुग्रीव पिआरा।
अवगुन कवन नाथ मोहि मारा॥

पर घर से चलते समय उसने तारा से कहा था –

कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ।
जो कदाचि मोहि मारहिं तो पुनि होउँ सनाथ॥

प्रीति और सेवा, इस पथ के दो आधार हैं। हमारी प्रगति इन पर निर्भर है। शुष्क हृदय – सूखा ठूँठ पत्थर हृदय इस साधना से कुछ पा न सकेगा। दिव्य प्यार हमारा जीवन है। क्यों हम संसार के झंझटों से छूटने के लिये तड़पते हैं। क्यों संसार के आराम को छोड़, **भूमि शयन पट मोट पुराना,** को प्रेमपूर्वक स्वीकार करते हैं; घर के स्वादपूर्ण भोजन को छोड़ वह उबला हुआ कठिनता से खाये जाने वाला भोजन आनन्दमग्न हो कर खाते हैं? शिविरों में क्या पी लेते हैं हम, मदहोशी क्यों छाई रहती है? हमें वहाँ से कुछ मिलता है। ऐसा मिलता है जो संसार में नहीं मिलता। उस अनूठे गुरु ने अनूठा मन्त्र दिया है हमें – अनूठा संसार बसा दिया, अनूठा जाम पिला दिया, एक अनूठा प्यार करना सिखा दिया।

ऐसा दिव्य प्यार भागवती कृपा से पूर्ण विषय रहित अगोचर, सागरवत् गम्भीर, आकाश की तरह विशाल, पाषाणवत कठोर, कुसुम की तरह कोमल, लीला रहित और सम्पूर्ण लीलामय, एकांगी और सर्वांगपूर्ण भी।

राम का, राममय, राम रूप, राम से प्यार करना सिखा दिया उस राम ने।

वह स्वयं राम ही था, राम ही दे गया हमें; राम ही बन गये हम: राम में राम ही समा गया है –

न तू दीखता है न मैं दीखता हूँ;
रमा राम मुझ में और मैं राम में हूँ।
न शिकवा है कोई, न हसरत है बाकी,
रमा राम मुझ में और मैं राम में हूँ।
न अपना बेगाना, न मेरा न तेरा,
रमा राम सब में और सब राममय है।
अनूठी है दुनियाँ, अनूठा यह बन्धन,
कि सब राम में है और सब राम ही है।
सीय राम मय सब जग जानी।
करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी॥

मैं पूछती हूँ उससे जिसको यह सब होने वाला पसन्द नहीं, जो इस से सन्तुष्ट नहीं, जिसे इसमें अनेक कमियाँ नज़र आती हैं। वह फिर-फिर क्यों हसरत भरी नज़र से झाँकता है पीछे को? मुख मोड़े हुए जाते को कौन खींचता है पीछे को? चाहता हुआ क्यों छोड़ नहीं पाता वह इसे? कौन जकड़े है उसे – एक ही अनोखा बन्धन।

भूला राही घर की याद करता है। महल का बास उसे छूट जाने वाली झौंपड़ी को भुलाने में असमर्थ होता है। मुस्कराते चेहरे उसके लुटे प्यार की दुनिया में आग लगाते हैं। चैन नहीं होती अपने के बिना इस संसार में; और हर जगह वह अपना होता नहीं।

सम्भव है वैराग्य और विवेक में किसी को उसका पथ मिला हो। सम्भव है कोई लीलामय को छोड़ शून्य में उसे टटोल सका हो। सम्भव है कोई अवधूत बन सका हो। पर हमें तो उसने ऐसा ही सुझाया है –

Love is God and God is love.

निर्विषय निष्कलंक निष्काम निर्व्यय विशुद्ध प्रेम ही कृष्ण है और कृष्ण ही प्रेम है।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।
मानउँ एक भगति कर नाता॥
उमा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध।
निज प्रभु मय देखें जगत केहि सन करहिं बिरोध॥
मेरे नाथ! जहाँ तू रखेगा वहाँ रहूँगी।
जो तू देगा सो पाऊँगी, जो करेगा सहूँगी॥

मुझे तेरी होकर तेरे लिये जीना है।

जित बिठाये तित ही बैठूँ
जो देवे सो खाऊँ,
जो पहिराबे सोई पहनूँ,
बेचे तो बिक जाऊँ।
तेरी इच्छा पूर्ण हो नाथ!

– श्रीमती सुमित्रा सभ्रवाल

प्रार्थना की उपादेयता

(पुरानी पत्रिका से उद्धृत)

जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिये भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार मन, शरीर और विचारों को पवित्र रखने के लिये प्रार्थना आवश्यक है। प्रार्थना में हम प्रभु के सामीप्य का अनुभव करते हैं। जैसे छोटा बालक माँ की गोद में पहुँच कर अपने को सब प्रकार के भय से मुक्त समझता है, उसी प्रकार प्रार्थना में हम प्रभु की गोद में पहुँचकर सांसारिक दु:खों से मुक्त हो जाते हैं। प्रार्थना से अध्यात्म ज्ञान, मानसिक शान्ति, शारीरिक शक्ति तथा आत्मबल प्राप्त होता है।

प्रार्थना द्वारा अहंकार का दमन और लघुता का भान सरलता से होने लगता है। संरक्षरणात्मक शक्ति पर अटूट आस्था उत्पन्न होने से मानव महान बनने लगता है। वह किसी भी श्रेष्ठ कार्य को करते हुए अपने को अकेला अनुभव नहीं करता। प्रसिद्ध है कि एक और एक मिलकर ग्यारह हो जाते हैं। किसी कठिन कार्य को करते हुए यदि एक सच्चे सहायक का सहारा मिल जाये तो मनुष्य की शक्ति केवल दुगनी ही नहीं होती अपितु ग्यारह गुनी हो जाती है। इसलिये सांसारिक चिन्ताओं से मुक्त होने का एक मात्र उपाय ईश्वर में असीम विश्वास है।

प्रभु के भरोसे सब कार्य छोड़ देने से मनुष्य सब कार्यों को करते हुए भी मानसिक अशान्ति या रुकावट का अनुभव नहीं करता। प्रार्थना से मन में निराशात्मक विचारों का आना रुक जाता है और अनेक मानसिक रोगों का अन्त हो जाता है। जब मनुष्य अपने गुण-अवगुणों तथा कार्यों के विषय में तीव्रता से विचारता है तो वह विक्षिप्त हो उठता है, परन्तु जब वह अपने आपको तथा अपने कार्यों को प्रभु के ऊपर छोड़ देता है तो उसे अलौकिक शान्ति का अनुभव होता है। श्रद्धा, कल्पना और तन्मयता की विचारवीचियों में वह आकर्षण है, जो आँखों में ऐसा आलोक उत्पन्न कर देती है कि चित्त जगमगाने लगता है। अन्तर्यामी की असीम अनुकम्पा के स्नेहिल स्पर्श से हृदय-हिम पिघलने लगता है। उस आलोक में आधि-व्याधि का अन्धकार पैर कैसे जमा सकता है? जगत-पिता के समक्ष शुभेच्छा पूर्ति के लिये की गई प्रार्थना निष्फल नहीं हो सकती। शारीरिक रोग भी प्रार्थना के द्वारा शीघ्र अच्छे हो जाते हैं। 'नोबल' पुरस्कार विजेता डॉ. एलकसिस लिखते हैं –

''मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है कि घाव, फोड़े, कैंसर, क्षय, पाण्डु आदि रोग केवल ईश्वर प्रार्थना से शीघ्र ठीक हो गये।''

ईश्वर में विश्वास वास्तव में अपने-आप में विश्वास है। आत्म-विश्वास से ही मनुष्य फलता फूलता है और उसके नष्ट हो जाने पर नष्ट हो जाता है। महात्मा गाँधी कहा करते थे – ''बिना हवा पानी के चाहे में जी जाऊँ, परन्तु बिना ईश्वर प्रार्थना के जीना असम्भव है। आप मेरी आँखे निकाल दें तो मैं मरूँगा नहीं परन्तु ईश्वर में मेरे विश्वास को समाप्त कर दें तो मैं मरा जैसा ही हूँ।'' इसीलिये वे प्रार्थना पर बहुत बल दिया करते थे।

प्रार्थना निष्काम तथा सकाम दो प्रकार की होती है। निष्काम प्रार्थना से आत्मबल बढ़ता है, आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है। सकाम प्रार्थना से भौतिक कामनायें पूरी होती हैं। प्रार्थना का एक प्रकार और है जो सकाम तथा निष्काम का मिश्रण कहा जा सकता है। भगवान् कृष्ण ने इसी पर विशेष बल दिया है। उनका आशय है कि संसार में कर्म भी करते रहो और प्रभु नाम भी जपते रहो। यही प्रकार हमारी वर्तमान जगत की परिस्थितियों के अनुकूल पड़ता है।

मानव मन अशान्ति का आगार है। चाहे हमें धन, पुत्रादि द्वारा कितना ही सुख क्यों न मिल जाये, फिर भी अघटित कल्पनाओं से यह मन सदैव अशान्त तथा दु:खी बना रहता है। इस अवस्था में केवल प्रभु की शरण जाने पर ही शान्ति प्राप्त होती है। आर्य ऋषियों ने इसका वास्तविक तत्त्व इस प्रकार बताया है कि जो जिसके पास होता है, वह उसी से मिल सकता है। प्रकृति स्वयं परिवर्तनशील अर्थात् अशान्त है, उससे शान्ति मिलना असम्भव है, किन्तु परमात्मा शान्ति के समुद्र हैं, उनके स्मरण मात्र से शान्ति प्राप्त होती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी प्रार्थना अत्यधिक उपयोगी है। यह तो हम जानते ही हैं कि चेतन मन के अतिरिक्त एक हमारा अचेतन मन भी है जिसका अनुभव प्राय: हमें हुआ करता है। कभी हम किसी वस्तु को रखकर भूल जाते हैं और बहुत ध्यान देने पर भी वह याद नहीं आती परन्तु कुछ समय पश्चात् एकाएक याद आ जाती है। यह अचेतन मन का ही प्रभाव है। हमारा यह अचेतन मन आश्चर्यजनक सामर्थ्यों का भण्डार है। प्रार्थना हमारे ध्यान को चेतन मन की ओर से हटाकर अचेतन मन की ओर आकर्षित कर देती है। इस अचेतन प्रदेश में जीवन का मूल स्रोत है जिसका अन्वेषण दु:साध्य है। गुप्त मन सदैव निर्विघ्न रूप से अपना काम किया करता है। रात्रि में निद्रावस्था में इसका कार्य और भी तेजी से सम्पन्न होता है यद्यपि हम इसके द्वारा उत्पन्न धाराओं को समझ नहीं पाते। जब किसी आकस्मिक उत्तेजना से गुप्त मन की शक्तियों का केन्द्र खुल जाता है तो मनुष्य यकायक प्रतिभा सम्पन्न हो उठता है। बड़े से बड़ा पापी भी एक दम पुण्यात्मा बन जाता है, जीवन धारा एकदम बदल जाती है। इसलिये मनोविज्ञान की दृष्टि से भी प्रार्थना का सीधा प्रभाव गुप्त मन पर पड़ता है।

मनोवैज्ञानिक प्रार्थना को एक प्रकार का संकेत या निर्देश कहते हैं। जिन भावनाओं का प्रभाव जितना ही जल्दी गुप्त मन पर पड़ता है उतनी ही शीघ्र वह प्रार्थना फलवती होती है। प्रार्थना गुप्त मन की शक्तियों को खोलने वाली कुञ्जी है। प्रार्थना करते समय चेतन मन की अवस्था कुछ काल के लिये मन्द पड़ जाती है। एकाग्रता होने के कारण संकेतों का सीधा प्रभाव अचेतन मन पर पड़ता है। अचेतन मन जो शक्ति का भण्डार है उन सूचनाओं को ग्रहण कर लेता है। अत: प्रार्थना में जितनी तत्परता एवं सत्यता होगी उतना ही शीघ्र एवं चिरस्थायी लाभ होगा। प्रार्थना की अवस्था में मन की दशा ग्रहणशील हो जाती है। अत: वह शीघ्रता से दिव्य भावनाओं को ग्रहण कर लेता है।

अत: सभी दृष्टियों से विचार करने पर हम देखते हैं कि मानव जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये प्रार्थना अत्यन्त आवश्यक है। मानव अपनी शक्तियों से अनभिज्ञ है। परमाणु बम के अविष्कार से हमने जाना है कि एक छोटे परमाणु में इतनी शक्ति है, तो हमारी आत्मा में कितनी शक्ति होगी? आत्म साक्षात्कार की आवश्यकता प्रतीत होती है।

स्वात्म-ज्ञान की प्राप्ति प्रार्थना के द्वारा ही सम्भव है। आत्म-ज्ञान हो जाने पर ब्रह्म-ज्ञान सुलभ होता है। जब तक मानव अपने स्वरूप और अपनी शक्ति को नहीं पहचानता तब तक वह समझता है कि संसार का केन्द्र 'मैं' ही हूँ अर्थात् उसके लिये अहम् या मैं की महिमा सबसे ऊँची बनी रहती है। जब वह अपने वास्तविक रूप को भली प्रकार अनुभव कर लेता है, तो दो सत्य उसके हृदय पर अंकित हो जाते हैं: पहला यह कि मैं शरीर और इन्द्रियों से भिन्न उनका अधिष्ठाता और कर्मों का कर्त्ता हूँ। दूसरा यह कि मेरी शक्ति परिमित है और ब्रह्माण्ड को चलाने वाली कोई शक्ति मुझसे बहुत बड़ी है – वह बड़ी शक्ति को जानना चाहता है। वेद-मन्त्र में कहा गया है कि कर्म करते हुए जीवन व्यतीत

करो, परन्तु उसमें लिप्त न हो। कर्म करते हुए उसमें लिप्त न होना उसी मनुष्य के लिये सम्भव है जो शरीर में रहता हुआ भी अपने आपको शरीर से भिन्न अनुभव करता है – उसका स्वामी बनकर रहता है। वह शरीर और इन्द्रियों के सुख को अपना असली सुख नहीं समझता। इस प्रकार का ज्ञान होने पर सब संशय नष्ट हो जाते हैं।

अत: प्रार्थना जीवन का वह सर्वोच्च शिखर है जिस पर आसीन होकर भ्रान्त मानव सत्य का अधिकाधिक दर्शन कर लेता है परन्तु प्रार्थना में एकाग्रता अति आवश्यक है। भक्त मीरा एक स्थान पर माला को उलाहना देती हुई कहती हैं –

माला तुझको मैं तब समझूँ,
जपती हूँ मैं जितनी बार।
जिनका नाम, नयन के सम्मुख,
आ जावें वे उतनी बार॥

वास्तव में तभी सच्ची प्रार्थना है जब हमारा मन प्रार्थना के समय एकाग्र होकर प्रभु चरणों में निमग्न हो जाये।

– श्रीमती चन्द्रावती शर्मा

❖ ❖ ❖

आध्यात्मिक विकास का मतलब है प्रकृति के उच्चतर मूल्यों को अपने जीवन में ढालना।

❖ ❖ ❖

हम अपने वचनों, कर्मों और विचारों पर ध्यान दें, ताकि हमारे विचार, वचन और कार्य नैतिक हों।

❖ ❖ ❖

एक आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने में ध्यान-अभ्यास करना और नैतिक जीवन जीना शामिल है।

❖ ❖ ❖

नैतिकता ही आध्यात्मिक जीवन की पहली सीढ़ी है।

❖ ❖ ❖

देते वक्त हम कुछ भी खोते नहीं हैं। जब हम दूसरों के लिये त्याग करते हैं तो हमें सन्तोष की प्राप्ति होती है।

निःस्पृहता

निःस्पृह जीवन जीना सीखना है। धीरे-धीरे उत्थान करें, एक दिन उत्थान के उच्च शिखर पर पहुँच जायेंगे। अपेक्षा भंग करें, दुर्गुणों की उपेक्षा करें, एक दिन अध्यात्म के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जायेंगे। प्रभु के प्रेम से लिपटा हुआ जीवन हो। जो स्वयं विधि- निषेध में बंधा है, वह जीव को कैसे मुक्त करेगा। जब प्रभु की ओर जायेंगे तो संसार का आश्रय छोड़ना होगा – पराश्रय छूटे। जब संसार की असारता का बोध होगा – वह बोध गुरु ही करवायेंगे। वासनाओं का अभाव ही मोक्ष है। बाह्य विषयों का त्याग ही मोक्ष का रास्ता है। संसार में कर्तव्य करो पर फँसो नहीं। हमारा स्वरूप आनन्द ही है, अविद्या के कारण हमारा स्वरूप ढका है।

दूसरे की हित सिद्धि का नाम ही पुण्य है। स्वभाव में लौटना ही अध्यात्म है। प्रभु की भक्ति के सरोवर में डूबे रहो, जैसे जल में मीन सुखी रहती है। शान्ति जहाँ है वहाँ हम जाते ही नहीं, अन्य वस्तुओं में हम शान्ति ढूँढते हैं। आनन्द है प्रभु में, हम ढूँढते हैं वस्तुओं में। विश्वास रखें कि प्रभु मेरा रक्षक है। बुद्धि को पराजित कर मन की इच्छाएँ पूरी करते हैं, यही हमारी आत्महत्या है।

उपासना का परिणाम चित्त की शुद्धि है, चित्त शुद्धि का परिणाम प्रभु प्राप्ति है। हमें सद्गुणों की सम्पत्ति इकट्ठी करनी है; हमें इसको अपने भीतर अर्जित, विकसित करना है। जब मन सरल होगा तब स्वतः ही शान्त हो जायेगा। आत्मीयता आने पर सरलता स्वतः ही आ जाती है। अपने दीपक स्वयं बनो। विषाद सीमा तक पहुँचे तो मानव भक्ति में डूबता है, विषाद का क्षण संसार को भुला देता है। आहार शुद्धि से अंतःकरण शुद्ध होता है, अंतःकरण की शुद्धि से प्रभु की स्मृति बनी रहती है। अंतःकरण की शुद्धि से मोक्ष माँगना नहीं पड़ता, स्वतः ही मिलता है। भक्ति हमारी दृष्टि बदलती है, दृश्य नहीं बदलती। अक्षर अर्थात् जिसका क्षरण नहीं होता। जो प्रभु को जाने बिना संसार से चला जाता है वो बहुत कृपण होता है। जो जानकर जाता है वो किसी भी जाति में हो, ब्राह्मण हो जाता है। विज्ञान से छिपा हुआ रहस्य प्रकट होता है। अध्यात्म के द्वारा अपने आप को जानते हैं। अपने आप को जानना अति श्रेष्ठ है। राम प्रभु हमारे ज्ञान चक्षु खोलना चाहते हैं। हम अपनी सोच से अधिक सोच ही नहीं सकते।

रावण को विद्या ने अहंकार दिया। विद्या एक तलवार है – या तो किसी की सहायता करोगे, या किसी को मारोगे। दूसरों के गुणों को अवगुणों में बदल-बदल कर लोगों को दिखाता है। अहंकार रूपी रावण यदि सिर पर सवार हो तो कोई कितना भी समझाये, उसे समझ नहीं आयेगी। ज्ञान अन्दर से, अन्तर से प्रकट होता है, अध्यात्म ज्ञान के बिना जीवन अपूर्ण है। उतावलेपन और अधीरता से मानव स्वयं अपनी शान्ति भंग करता है। सहनशीलता आनी चाहिए। हम अपनी मानसिक शान्ति के स्वयं ही दुश्मन हैं, मैं स्वयं ही अपना शत्रु हूँ। यदि अपना मनोबल गिरा दोगे तो भजन कैसे करोगे।

जिस दिन प्रेम सेवा में बदल जायेगा उसी दिन आप सच्चे भक्त बन जाओगे। सन्तोष आने पर दुःख

तो हो ही नहीं सकता। यही निर्वाण है। कर्तापन बहुत बड़ा बन्धन है। सच्चा सन्त संसार में रहते हुए भी मुक्ति का आनन्द ले सकता है। बालि ने मरने से पहले अहम् छोड़ दिया था। भक्ति कृपा-साध्य है, कर्म-साध्य नहीं। जब हम अपने को मालिक मानते हैं तो वास्तविक मालिक को भूल जाते हैं। लोकहित की भावना से किया जाने वाला कर्म ही यज्ञ है। विनाश ही सृजन का कारण है। जीवन में जो कुछ भी मिले, उसी से आत्मसात करो। जो प्राप्त है वही पर्याप्त है। ज्ञानी अपेक्षारहित होता है, वो कुछ चाहता नहीं। उसका कर्म भगवदर्पण होता है। प्रभु तो हमें सर्वश्रेष्ठ ही देगा। प्रभु-चरणों में श्रद्धा होगी तो सच्चा समर्पण होगा, कामना का विसर्जन होगा।

भक्ति में कोई बन्धन नहीं। प्रभु के पास सुनने की भी क्षमता है, हल भी है। हमें सुख शाश्वत चाहिये या अशाश्वत, यह हमें सोचना होगा। शाश्वत सुख ही शाश्वत शान्ति दे सकता है। शान्ति शाश्वत हो। आने-जाने वाले में मन लगाओगे तो जन्म-मरण होगा ही। असंयमित जीवन अपने से ही शत्रुता होगी, इससे मेरा मन कमज़ोर होगा। जीभ सज्जन लोग, दाँत दुष्ट लोग। जी की जलन ही अन्धकार है, अज्ञान ही अन्धकार है, अज्ञान की तलवार से युद्ध मत करो। शरीर के भीतर आत्मा ही प्रकाश है। मन को वश में कर लो, फिर इसी रथ से अनन्त को जा सकता है। मोह ही अज्ञान है, अज्ञान से कर्तव्य-अकर्तव्य का पता नहीं चलता। असत्य का ज्ञान हो तो सत्य पर चल पड़ो। गीता ज्ञान का भण्डार है। कर्ता बनने पर भोक्ता होना पड़ता है। कर्मयोगी की कोई भी क्रिया अपने लिये नहीं है। आसक्ति कर्म और कर्मफल में ही होती है। साधु भिक्षा लेकर गृहस्थी को कृतार्थ करता है। हरिचर्चा करते रहने से हमारे हृदय की भूमि अधिक उपजाऊ हो जायेगी। आचरण से गिरी औरत का विश्वामित्र उद्धार नहीं कर सकते। उसका उद्धार वही कर सकता है जिसका सपने में भी आचरण ख़राब न हो।

भक्ति में स्नेह का तेल लगा लो, कर्म के चाकू से जगत का काम करो, फिर जगत तुममें व्याप्त नहीं होगा। जीवन की किसी भी परिस्थिति में बन्धन न लगे, जीते जी ही मुक्त हो जायेंगे। निरासक्त होकर कर्म करने से हम लिप्त नहीं होते। प्रभु के आश्रय से कर्म करने का प्रयत्न करें, हम अपने कर्मों को प्रभु के चरणों में समर्पित करते रहें। गीता का कृष्ण अध्यात्म का परब्रह्म है। जब हम रिक्त होंगे तभी प्रभु के अनुग्रह की वर्षा होगी। अपने संकल्प शुद्ध रखने होंगे। 'मैं' व्यक्ति को इतना संकीर्ण बना देता है कि व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों को तिरस्कार की दृष्टि से देखता है। एक 'मैं' अहंकार है, एक 'मैं' स्वाभिमान है। स्वाभिमान जीवित रहना चाहिए।

जीवन के रथ के लिए पुरुषार्थ और भाग्य दोनों ही आवश्यक हैं। साधक यह माने कि मैं अज्ञानी हूँ, बीमार हूँ, तभी गुरु रूपी डॉक्टर के पास जायेगा। जो प्रभु के लिये जिये वही पार्थ है। अध्यात्म वह विद्या है जो व्यक्ति को मुक्ति की ओर ले जाती है। संसारी विद्या व्यक्ति को बन्धन में डालती है। स्कूल का बच्चा छुट्टी के समय प्रसन्न होता है और हम जीवन भर बन्धन में ही रहना चाहते हैं। अध्यात्म में निर्भयता होती है, संसार के सभी पदार्थों में भय रहता है।

– रमना सेखड़ी

धर्म की परिभाषा

'धर्म' शब्द का प्रयोग हमारी बोलचाल में भी और साहित्य में भी बहुलता से किया जाता है, किन्तु इसका अर्थ सन्दर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है। आम तौर पर तो धर्म शब्द किसी विशेष समुदाय को इंगित करता है, जैसे हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म, बौद्ध धर्म आदि, किन्तु इसके अतिरिक्त राष्ट्रधर्म, जातिधर्म, कुलधर्म, स्त्रीधर्म, पुत्रधर्म, शिष्यधर्म भी सुनने में आते हैं।

गीता के प्रथम अध्याय में कुलधर्म और जातिधर्म नष्ट होने पर अर्जुन की चिन्ता व्यक्त की गई है। (श्लोक 40 व 43)। एक पतिव्रता स्त्री का धर्म है पति की सब प्रकार से सेवा करना, पुरुष का धर्म है नारी की रक्षा व सम्मान करना, न्यायाधीश का धर्म है अपराधी को दण्ड देना, चाहे अपराधी उसका सगा-सम्बन्धी ही क्यों न हो, धनाढ्य व्यक्ति का धर्म है जरूरतमन्दों की जरूरतें पूरी करना, ब्राह्मण का धर्म है शास्त्रों का पठन-पाठन, क्षमाभाव रखना, सरलता आदि, वैश्य का धर्म है कृषि, पशुपालन वाणिज्य आदि, शूद्र का धर्म है सब वर्णों की सेवा करना।

जैन समुदाय में कहा गया है – **अहिंसा परमो धर्मः।** शास्त्रों में मानवता को ही श्रेष्ठ धर्म बताया गया है। बुद्ध, महावीर और क्राइस्ट – इन सभी ने धर्म को अपने-अपने मतानुसार परिभाषित किया है। महावीर तो समता को धर्म का पर्याय मानते रहे।

मनुस्मृति के अनुसार धर्म के दस लक्षण बताये गये हैं –

धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रह
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।

अर्थात् धैर्य, सहनशीलता, काम एवं लोभ पर संयम, चोरी न करना, पवित्रता (कायिक, मानसिक तथा वाचिक) इन्द्रियों पर अधिकार, ज्ञान, अध्ययनशीलता, सत्य का आचरण एवं क्रोध का अभाव – ये दस लक्षण जिस व्यक्ति में पाये जाते हैं अथवा जिसने ये गुण धारण किये हुए हैं वह व्यक्ति धार्मिक कहलायेगा चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग, समुदाय, देश या लिंग का हो।

गीता में धर्म शब्द का प्रयोग अधिकतर स्वाभाविक कर्म और कर्तव्य के अर्थ में किया गया है। कर्तव्य का निर्धारण सामाजिक स्थिति, वर्ण और आश्रम के आधार पर किया जाता है जैसे युद्ध के मैदान में अर्जुन का कर्तव्य था विपक्षियों से युद्ध करना जिससे अर्जुन बचना चाहता था। स्वाभाविक कर्म प्रत्येक व्यक्ति के अलग-अलग होते हैं जिनका आधार होता है पूर्व जन्मों के संस्कार, इस जन्म में मिला हुआ परिवार, मित्रों, सहपाठियों, अध्यापकों का व्यवहार, वित्तीय स्थिति आदि और आध्यात्मिक विकास का स्तर।

परिस्थिति के अनुसार धर्म कैसे बदलता है उसके उदाहरण पुराणों में भी मिलते हैं। महाभारत के युद्ध में युधिष्ठिर का झूठ बोलना धर्मानुसार बताया गया तो अर्जुन के द्वारा निहत्थे कर्ण पर बाण चलाना धर्म बताया। मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान् राम द्वारा ताड़का नामक स्त्री का वध करवा कर धर्म की संज्ञा दी और रावण के यज्ञ का विध्वंस कराना भी न्यायसंगत ठहराया। तात्पर्य यह है कि धर्म की निश्चित परिभाषा करने में बड़े-बड़े विद्वान भी भ्रमित हो जाते हैं।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अपने धर्म से दूसरे का धर्म अच्छा लगने लगता है क्योंकि वह आचरण करने में सुगम है। भगवान् ने ऐसी मानसिकता की भरपूर भर्त्सना करते हुए कहा है कि दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म उत्तम है। अपने धर्म में तो मरना भी अच्छा बताया गया है (गीता 3/35)।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

प्रकृति के सभी तत्त्वों के अपने-अपने गुण धर्म होते हैं, वे उनको कभी नहीं छोड़ते जैसे अग्नि का धर्म है उष्णता, पृथ्वी का गन्ध, चन्द्रमा का शीतलता,

वृक्ष का छाया आदि। राजा का धर्म है प्रजा की रक्षा करना, न्याय करना, प्रजा का पालन-पोषण करना, दुष्टों को दण्ड देना, निजी स्वार्थ का त्याग करके जनहित में निर्णय लेना और उनको लागू करना। इसीलिये भगवान् ने अर्जुन को कहा – क्षत्रिय के लिये धर्मयुक्त युद्ध के अतिरिक्त अन्य कोई कल्याणकारी कर्तव्य नहीं है (गीता 2/31)।

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते॥

तथा इस धर्मयुक्त युद्ध को नहीं करेगा तो स्वधर्म को खोकर पाप को प्राप्त होगा (गीता 2/33)।

अथ चेतत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि॥

आश्रम के अनुसार भी धर्म बदलते हैं। शास्त्रों में मनुष्य जीवन को चार आश्रमों में विभाजित किया गया है – प्रथम पच्चीस वर्षों तक विद्या का अर्जन करना ही मानव का धर्म बताया गया है क्योंकि शेष जीवन इसी पर आधारित है। इसको ब्रह्मचर्य आश्रम कहा गया है। 25 से 50 वर्ष की आयु तक जीवन की वास्तविक कार्य अवधि है। इस अवधि में अपनी अर्जित विद्या के आधार पर धन का अर्जन करना, उसका सदुपयोग करना, विवाह करना, परिवार का पालन-पोषण करना, माता-पिता की सेवा करना, अतिथि-सेवा आदि करना – यही धर्म है। इसको गृहस्थाश्रम कहा गया है।

50 से 75 वर्ष की आयु में समाज की सेवा को प्राथमिकता देकर सामाजिक ऋण से मुक्त होना ही धर्म है और 75 के बाद शेष जीवन भर आत्म-कल्याण के पथ पर अग्रसर होना ही धर्म है। आगामी जीवन में कहाँ जाना है, क्या साथ ले जाना है, इसका विचार करना, संसार से विरक्त हो जाना ही धर्म है।

स्पष्ट है कि भगवान् ने गीता में धर्म को कर्तव्य का पर्यायवाची बताया है और कर्तव्यपालन को ही कर्मयोग का आधार बताया है। किन्तु गीता के अन्त में अध्याय 18 के श्लोक 66 में जो सब धर्मों को त्यागने की बात कही गई है वह उपरोक्त धारणा का अपवाद प्रतीत होता है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

उपरोक्त श्लोक चूँकि गीता के अन्त में कहा गया है तो एक प्रकार से यह गीता का सारांश ही है। एक दृष्टि से तो विचित्र सी बात लगती है कि भगवान् अर्जुन को सभी धर्मों को त्यागने का आदेश कैसे दे सकते हैं। किन्तु पूरी गीता का अवलोकन करें तो भगवान् का आशय स्पष्ट हो जाता है। गीता के आरम्भ में अर्जुन कहता है कि अपने सम्बन्धियों और गुरुजनों को मारने से मुझे पाप लगेगा और कुलधर्म, जातिधर्म आदि नष्ट हो जायेंगे अर्थात् पाप और धर्म एक दूसरे के विरोधी शब्द हैं। गीता के अध्याय 4 में स्वयं भगवान् ने ही कहा है कि जब-जब धर्म की हानि होती है और पाप बढ़ जाता है, तब-तब मैं अवतार धारण करता हूँ। तो अब अलग बात कैसे कह रहे हैं। वास्तव में भगवान् उन मान्यताओं को त्यागने के लिये कह रहे हैं जिनको अर्जुन अज्ञानतावश धर्म समझ रहा था। अर्जुन यह नहीं समझ पा रहा था कि पाप और धर्म के जो नियम साधारण अवस्था में लागू होते हैं वे युद्ध में लागू नहीं होते। इसीलिये अर्जुन को सम्यक ज्ञान की आवश्यकता थी।

तो क्या आशय था भगवान् का? अर्जुन डरता था पाप से। हर व्यक्ति डरता है। भगवान् उसी डर को दूर करते हुए कहते हैं कि मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर दूँगा, बस तू मेरी शरण में आ जा – केवल मेरी शरण में – **माम् एकं** – अन्य कुछ भी नहीं। यहाँ दो शर्तें हैं – शरण और एक। शरण में आने का अर्थ है जो कुछ मैं कहता हूँ कर, बिना किसी तर्क-वितर्क के; और एक का अर्थ है शेष सब कुछ छोड़कर। सब कुछ मतलब? उत्तर दिया है सन्त तुलसीदास ने रामचरितमानस में –

जौं नर होइ चराचर द्रोही।
आवै सभय सरन तकि मोही॥

तजि मद मोह कपट छल नाना।
करउँ सद्य तेहि साधु समाना॥
जननी जनक बंधु सुत दारा।
तनु धनु भवन सुहृद परिवारा॥
सब कै ममता ताग बटोरी।
मम पद मनहि बाँध बरि डोरी॥

तत्त्व क्या है? सब कर्तव्यों को पूरा कर और उनको मुझे अर्पित कर दे **(सर्वधर्मान्परित्यज्य)**, सभी आश्रयों को छोड़ (जो ऊपर बताये गये हैं), मेरी शरण में आ **(मामेकं शरणं व्रज)**, वो सब कार्य कर जो मैंने गीता में बताये हैं, तो मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर दूँगा **(मोक्षयिष्यामि)**, तू शोक मत कर **(मा शुचः)**।

इस प्रकार अपने-अपने धर्म का पालन करते हुए जीवन के अन्त समय में गीता के अध्याय 18 श्लोक 62 का चिन्तन करते हुए परम धाम को प्राप्त करने की पात्रता प्राप्त करें –

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥

हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा। सब प्रकार से शरण में जाने का अर्थ है – अनन्यभाव से अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमपूर्वक निरन्तर भगवान् के नाम, गुण, प्रभाव का चिन्तन करना और उनके आज्ञानुसार निःस्वार्थ भाव से केवल परमेश्वर के लिये आचरण करना।

– रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'

❖ ❖ ❖

बाल साधना शिविर-2024 का विवरण

साधना धाम हरिद्वार में बाल साधना शिविर का शुभारम्भ दिनांक 8 जून 2024 को अपराह्न में किया गया जिसमें व्यवस्था के लिये समितियाँ बनाई गईं और उनके कार्य निर्धारित किये गये। साथ ही शिविर में होने वाली गतिविधियों की रूपरेखा भी बालकों को समझाई गई।

प्रथम दिवस रात्रि के भोजन के पश्चात् विनोद गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें बालकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपना-अपना परिचय दिया।

शिविर की परम्परा के अनुरूप प्रतिदिन प्रातः 5:00 से 6:00 बजे तक तथा सायंकाल में 7:00 से 8:00 बजे तक साधना मन्दिर में सामूहिक जाप किया जाता था जिसका आवाहन बालकों द्वारा ही किया जाता था। प्रातःकालीन जाप के बाद बालकों को नील धारा पर ले जाकर योगाभ्यास करवाया जाता था।

9 जून से 11 जून तक प्रातःकालीन सत्र में गीता पाठ के बाद श्री अविनाश ग्रोवर द्वारा बालकों का मार्गदर्शन तथा श्री भवनाथ झा द्वारा जीवन दर्शन तथा बालकों से सम्बन्धित गीता के अंश समझाये गये। अपराह्न के सत्र में बहन रमना सेखड़ी जी ने बालकों की समझ में आने वाली सरल भाषा में गुरुदेव की जीवनी पर प्रकाश डाला।

8 जून से 11 जून तक प्रतिदिन रात्रि भोजन के पश्चात् विनोद गोष्ठी होती थी जिसमें बालकों ने अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। 11 जून के अपराह्न के सत्र में बालकों को योग्यता प्रमाण पत्र तथा पारितोषिक वितरित किये गये।

12 जून की प्रातः को सभी बालकों को मार्ग का भोजन देकर विदा किया गया। इस शिविर में 100 बालकों व 50 वयस्क साधकों ने भाग लिया।

बाल शिविर का संचालन तथा व्यवस्था प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी मुख्य रूप से श्री अविनाश ग्रोवर द्वारा की गई। इस पावन कार्य के लिये श्री अविनाश जी साधुवाद के पात्र हैं।

कार्यकारिणी की दिनांक 20.07.2024 की बैठक का विवरण

कार्यकारिणी की बैठक शनिवार दिनांक 20 जुलाई 2024 को साधना धाम हरिद्वार के कार्यालय में श्री विष्णु कुमार जी गोयल की अध्यक्षता में पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दिन के 11:00 बजे गुरु वन्दना के साथ प्रारम्भ हुई। इस बैठक में निम्नलिखित सदस्यों ने भाग लिया –

1.	श्री विष्णु कुमार गोयल	अध्यक्ष
2.	श्रीमती सुशीला जायसवाल	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
3.	श्री अनिल चन्द्र मित्तल	उपाध्यक्ष
4.	श्रीमती रमना सेखड़ी	सचिव
5.	श्री अनिरुद्ध अग्निहोत्री	कोषाध्यक्ष
6.	श्री रमेश चन्द्र गुप्त	संयुक्त सचिव
7.	श्री रवि कान्त भण्डारी	प्रबन्धक
8.	श्रीमती कृष्णा भण्डारी	सदस्य
9.	श्रीमती सोमवती मिश्र	सदस्य
10.	श्रीमती कमला सिंह वर्मा	सदस्य
11.	श्रीमती अरुणा पाण्डेय	सदस्य
12.	श्री रमेश जायसवाल	सदस्य
13.	श्री सुधीर कान्त अग्रवाल	सदस्य
14.	श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल	सदस्य
15.	श्री हरपाल सिंह राजपूत	सदस्य
16.	श्री विजयेन्द्र पाल भण्डारी	सदस्य
17.	श्री मोहित मित्तल	सदस्य
18.	श्री विजेन्द्र गौड़	विशेष आमन्त्रित सदस्य
19.	श्री राजीव रतन सिंह	विशेष आमन्त्रित सदस्य
20.	श्री दीपक अग्रवाल	विशेष आमन्त्रित सदस्य

कार्यकारिणी की कार्यवाही आरम्भ करते हुए सर्वप्रथम दिनांक 19 अप्रैल 2024 की बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई गई जिसका अनुमोदन सभी सदस्यों द्वारा किया गया। इसके पश्चात् निर्धारित कार्यसूची के अनुसार विचार विमर्श करके निम्नलिखित बिन्दुओं पर निर्णय लिये गये।

1. दिगोली तपस्थली के निर्माण कार्य की समीक्षा करते हुए अध्यक्ष जी द्वारा बताया गया कि दिगोली का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो गया है परन्तु ठेकेदार द्वारा कार्य की पूर्णता हेतु अतिरिक्त व्यय की माँग की गई है। वित्त वर्ष 2023-24 में निर्माण हेतु लगभग 38 लाख रुपये की अग्रिम राशि दी जा चुकी है जिसका बिल के अनुसार समायोजन होना शेष है। इस सम्बन्ध में निर्णय लिया गया कि सर्वश्री राजीव रतन जी, अनिल मित्तल जी, विजेन्द्र गौड़ जी, सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल जी तथा अध्यक्ष जी द्वारा दिगोली जाकर तपस्थली का निरीक्षण करके जो भी उचित होगा इसका निर्णय करके अन्तिम भुगतान व निर्माण कार्य की पूर्णता सुनिश्चित की जायेगी।
2. साधना धाम हरिद्वार में 20 केवीए का सोलर प्लांट लगाने पर सहमति हुई जिसकी लागत लगभग 12 लाख रुपये आने की सम्भावना है।
3. साधना धाम में विद्युत लोड 20 KW कराने पर सहमति हुई जो वर्तमान में 15 KW है।
4. होम्योपैथी के डॉक्टर मनमोहन मिश्र को स्थायी रूप से धाम में रहने तथा चिकित्सालय में कार्य करने हेतु सहमति दी गई।
5. फिजियोथेरेपी की मशीनों के लिए 75 हजार तक के बजट की स्वीकृति दी गई।
6. साधना धाम हरिद्वार के भवन के नवीनीकरण एवं मरम्मत हेतु आर्किटेक्ट से परामर्श करके रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु निम्नलिखित सदस्यों की समिति का गठन किया गया –

क. श्री मोहित मित्तल
ख. श्री विजेन्द्र गौड़
ग. श्री राजीव रतन सिंह
घ. श्री अनिल चन्द्र मित्तल
ड़. श्री हरपाल सिंह राजपूत

च. श्री अनिरुद्ध अग्निहोत्री
छ. श्री अजित अग्रवाल
ज. श्री सुरेन्द्र अग्रवाल

7. तपस्थली, डिस्पेंसरी एवं अन्नक्षेत्र के खर्चों के लिये अलग-अलग निधि बनाये जाने पर सहमति व्यक्त की गई। इस कार्य के लिये धाम के सनदी लेखाकार एवं लेखा परीक्षक से विचार विमर्श करके कार्यान्वित करने के लिये श्री रमेश चन्द्र गुप्त को अधिकृत किया गया।
8. पिछली बैठक से अब तक निम्नलिखित साधक/साधिकाओं के देहावसान के समाचार प्राप्त हुए हैं –

1. श्रीमती सुधा अग्रवाल (5.6.2024)
2. श्री भगवान प्रसाद भारती (26.6.2024)
3. श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल, बीसलपुर
4. श्रीमती प्रमोद बाला रस्तोगी, बिजनौर (26.7.2024)

दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि देने हेतु दो मिनट का मौन रखकर गुरुदेव महाराज से प्रार्थना की गई कि इन सब आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

अन्त में पूर्ति मन्त्र बोलकर गुरुदेव महाराज को भोग लगाकर प्रसाद वितरण करते हुए बैठक की समाप्ति की गई।

(विष्णु कुमार गोयल)
अध्यक्ष

(रमना सेखड़ी)
सचिव

❖ ❖ ❖

वर्ष 2024 में तपस्थली में गुरु पूर्णिमा महोत्सव का विवरण

इस वर्ष दिगोली तपस्थली में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर कानपुर, अहमदाबाद, तिलहर, जोधपुर और गाजियाबाद आदि विभिन्न स्थानों से आकर 35 साधक एकत्रित हुए जिन्होंने 18 जुलाई से 21 जुलाई तक गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया। 18 जुलाई की सायंकाल के सामूहिक जाप से प्रारम्भ होकर 21 जुलाई तक दोनों समय सामूहिक जाप चला। 20 जुलाई की सायंकाल के सामूहिक जाप के बाद 21 जुलाई की प्रातः तक अखण्ड जाप किया गया। दिन के समय प्रवचन हुए जिनका सार नीचे दिया गया है –

श्री अजय अग्रवाल

सुख और दुःख स्थिति विशेष पर निर्भर नहीं करता है। वह तो निर्भर करता है हमारे दृष्टिकोण पर। हमारा दृष्टिकोण जितना अधिक ऊँचा होता चला जायेगा उसी के अनुरूप हम द्वन्द्वों से ऊपर उठते चले जायेंगे, परन्तु यह होगा प्रभु पर आश्रित रहने से और उनकी आज्ञा मानने से।

श्री पुरेन्दर तिवारी

सभी वेद, शास्त्र, पुराण और सन्त हमें यही बताते हैं कि परहित के समान कोई दूसरा धर्म नहीं है और दूसरे को दुःख पहुँचाने के समान कोई दूसरा अधर्म नहीं है। हमें भजन करते-करते इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम दूसरों के लिये कितना अधिक और कैसे उपयोगी हो सकते हैं।

बहन पूजा जायसवाल

राम नाम अपने में पूर्ण साधन है, इसी से सब कुछ होता चला जायेगा। प्रभु को प्राप्त करने के लिये पुकार बहुत आवश्यक है। पुकार - अर्थात् प्रभु का होने की चाह। चाह को बढ़ाने के लिये पूज्य स्वामी जी ने चार साधन बताये हैं - सत्संग, मनन, सद्शास्त्रों का अध्ययन और प्रार्थना। अतः अधिक से अधिक राम नाम का जाप करें और नित्य दो समय जाप में अवश्य बैठें।

साधना धाम हरिद्वार में गुरु पूर्णिमा पर्व 2024 का विवरण

साधना धाम हरिद्वार में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर शिविर का आयोजन किया गया जिसका शुभारम्भ दिनांक 16 जुलाई के अपराह्न में ड्यूटियाँ लगाने से हुआ। इस शिविर में विभिन्न स्थानों से आकर लगभग 200 साधकों ने भाग लिया। सदा की भाँति इस बार भी प्रातःकालीन सत्र में गीता पाठ के पश्चात् गीता पर प्रवचन तथा सायंकालीन सत्र में भजनों के साथ व्यावहारिक सत्संग हुआ। इन दोनों सत्रों में साधकों ने जो प्रवचन दिए उनका सार संक्षिप्त में नीचे दिया जा रहा है।

प्रवचन सार

श्रीमती कुसुम सिंह

भगवान् ने गीता के अध्याय 11 में बताया है कि

- मेरी प्राप्ति अनन्य भक्ति से ही हो सकती है।
- एक नम्बर पर भगवान् को रखना, संसार को दूसरे नम्बर पर रखना।
- जो भगवान् के परायण है, उसका योगक्षेम भगवान् स्वयं कर देते हैं।
- प्रेम सबसे करना पर आसक्ति किसी से नहीं करना।

श्रीमती रमना सेखड़ी

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥

तत्त्वतः शब्द से यह स्पष्ट किया है कि इसे केवल बुद्धि के स्तर पर जानना नहीं है, वरन् यह अनुभव करना है कि अपने ही हृदय में किस प्रकार परमात्मा का अवतरण होता है, आज निःसन्देह हम पशु के समान जीवन व्यतीत कर रहे हैं परन्तु जब कभी हम निःस्वार्थ इच्छा से प्रेरित हुए कर्म करते हैं, उस समय परमात्मा की ही दिव्य क्षमता हमारे कर्मों में झलकती है। मृत्यु से अधिक दुखदायी जन्म है, क्योंकि उसके पश्चात् दुःखों की एक शृंखला प्रारम्भ हो जाती है। अतः मोक्ष का लक्षण पुनर्जन्म का अभाव कहा है। जब साधक निष्काम भाव से कर्म करता है, तब उसके कर्मों में दिव्यता, विलक्षणता आने लगती है। इस प्रकार कामना का सर्वथा नाश होने पर उसके कर्म भी दिव्य हो जाते हैं, अर्थात् बन्धनकारक नहीं होते, फिर उसके पुर्नजन्म का प्रश्न ही नहीं होता।

श्रीमती सुमन जायसवाल

साधना के साथ साथ हमें अपने व्यवहार को भी नापना होगा।

हमें अपने उद्देश्य को नहीं भूलना चाहिए कि हमें भगवान् से ऐक्य प्राप्त करना है।

जो वस्तुएँ हमें मिली हैं वे भगवान् की प्राप्ति के साधन हैं।

भगवान् भाव-ग्राही हैं, भाव से दी गई प्रत्येक वस्तु को ग्रहण करते हैं।

श्रीमती अरुणा पाण्डे

जीवन में गुरु का होना अति आवश्यक है। कबीर जी, स्वामी विवेकानन्द जी आदि जितने भी महान भक्त हुए हैं, सब गुरु के कारण ही महान हुए हैं।

हमारे भी गुरु हैं स्वामी रामानन्द जी महाराज, जिनके मार्गदर्शन का अनुसरण करने से हमारा भी कल्याण निश्चित है।

गुरुदेव महाराज ने कहा है – साधना को ही

जीवन का लक्ष्य बना लेना है। भगवान् हमारे अन्दर बैठे हैं, उन्हीं से हमें प्रार्थना करनी है भक्ति के लिये, जाग्रति के लिये और जीवन को उपयोगी बनाने के लिये।

श्रीमती कमला वर्मा

स्वामी जी ने विरासत में हमें अपना साहित्य दिया है। हमें उसका अध्ययन करना चाहिए। वहीं से हमें उचित मार्गदर्शन मिलेगा।

पत्र-पीयूष में स्वामी जी महाराज ने साधकों को लिखा है – भगवान् पर जीवित विश्वास करने के लिये, सतत अवतरित होने वाली कृपा का भरोसा करने के लिये और सर्वस्व का समर्पण करने के लिये।

जीवन में अनुकूलता और प्रतिकूलता – दोनों ही भगवान् की देन हैं और उनको भगवान् की कृपा ही समझना चाहिये। अनुकूलता में दूसरों की सेवा करें, प्रतिकूलता को भगवान् की इच्छा समझ कर स्वीकार करें और धैर्य रखें।

श्रीमती शशि वाजपेयी

साधना में आवश्यक बात है – सभी कर्म प्रभु के लिये हों, जो भी कर्म करें प्रभु को अर्पण करते चलें।

जब भगवान् से जुड़कर, भगवान् के लिये, भगवान् के द्वारा सभी कर्म हो रहे हों तो आसक्ति स्वत: ही समाप्त हो जाती है।

हमारे कर्म न पुण्यमय हैं न पापमय। हमारे अन्दर की भावना ही बन्धन का कारण होती है। भगवान् से युक्त कर्म बन्धन छुड़ाते चले जाते हैं।

पूज्य स्वामी जी कहते हैं – सभी नातों में भगवान् का नाता स्थापित कर देना होगा।

श्री योगेन्द्र पाण्डे

गुरु शब्द का अर्थ है – 'गु' अर्थात् गुणातीत – जो सत्व, रज और तम नामक तीनों गुणों से परे हो चुका हो और 'रु' अर्थात रूपातीत – जो हर क्षण, हर पल अपने इष्ट के रूप का ध्यान कर रूप से भी परे हो चुका हो। गुणातीत के लक्षण गीता के अध्याय 14 के अन्त में दिए गये हैं।

कर्म तीन प्रकार के होते हैं – (1) संचित – जो पूर्व के अनेक जन्मों के कर्मों का समूह है। (2) प्रारब्ध – जो इस जन्म में भोगने के लिये मिले हैं। (3) क्रियमाण – जो इस जन्म में नये संस्कार बनाते हैं और इनका फल हमें इस जन्म में भोगना पड़ता है। जिनका नहीं भोग पाते वे संचित कर्मों में जमा हो जाते हैं।

यदि पूर्व के बुरे कर्मों या पापों को हटाना चाहते हैं तो प्रभु राम की भक्ति अति आवश्यक है क्योंकि अवचेतन मन में पापों को खत्म सिर्फ प्रभु की अनन्य भक्ति से ही किया जा सकता है और इसके लिये संसार और शरीर की आसक्ति से विमुख होना पड़ेगा।

प्रभु को पाने की तीव्र उत्कण्ठा हमारे अन्दर है तो प्रभु हमें दर्शन अवश्य देते हैं।

श्रीमती गीता गुप्ता

साधना पथ पर आगे बढ़ने के लिये भगवान् ने चार साधन बताये हैं –

1. राम नाम का जाप
2. नाम में विश्वास
3. समर्पण और
4. सेवा

श्रीमती सुनीता दुआ

हम सभी जीवन में सुख शान्ति चाहते हैं, दु:ख, वियोग, अपमान कोई नहीं चाहता। फिर भी सब कुछ मिलता ही है। जीवन में सुख और दु:ख दोनों ही अनिवार्य रूप से आते हैं और दोनों ही विकास के लिये आवश्यक भी हैं। हर परिस्थिति में भगवान् को

याद रखना है, मोह और आसक्ति को त्यागना है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है – उठो, जागो, चलते रहो और लक्ष्य को प्राप्त करो।

गुरु महाराज ने हमारी बाँह पकड़ी है तो छोड़ेंगे नहीं। वही हमारे अन्दर के विकारों को दूर करेंगे।

जब तक हम स्वयं चलने के तैयार नहीं हैं तो कोई हममें परिवर्तन नहीं कर सकता। हमें अपनी कृपा अपने ऊपर स्वयं करनी है।

श्रीमती मीना बिजलवान

गुरु ही हमारी पूर्ण माँ है जिसको हम सच्ची माँ कह सकते हैं।

साधना धाम ही हमारा मोक्ष का द्वार है। यहाँ आकर ही हमें प्रेम की प्राप्ति होती है।

यहाँ गुरुदेव हमारे अति समीप रहते हैं। उनके समीप बैठने से मन के विकार दूर होते हैं।

राम नाम जैसे-जैसे भीतर बैठता जाता है, सभी कुछ दिव्य और निर्मल करता चला जाता है।

श्रीमती सुशीला जायसवाल

राजविद्याराजगुह्य योग नामक गीता के अध्याय 9 में भगवान् ने बताया है –

कर्मयोग – कर्म करते हुए तू भगवान् को प्राप्त कर लेगा। यह है गुह्य योग।

ज्ञानयोग गुह्यतर है। इसमें बताया गया है कि आत्मा एक को ही प्रकाशित करता है लेकिन परमात्मा सभी को प्रकाशित करता है।

भक्तियोग गुह्यतम है। यह सबसे उत्तम योग है।

भगवान् कहते हैं जब तू मुझे तत्व से जान जायेगा तो आवागमन से मुक्त हो जायेगा। तू संसार में आयेगा लेकिन लोक कल्याण के लिये तेरा जन्म होगा।

इसको राजविद्या योग इसलिये कहा क्योंकि यह सब योगों का राजा है, उत्तम है और करने में सुलभ है। गुह्य योग इसलिये कहा क्योंकि इसे सभी से नहीं कहना चाहिए, जो सुनने की इच्छा वाला है उसी से कहना चाहिए। इससे अधिक पवित्र करने वाला कुछ है ही नहीं। जो भगवान् से युक्त नहीं है वह इसे नहीं प्राप्त कर सकता।

यह ज्ञान विज्ञान योग अत्यन्त सरल और सभी को पवित्र करने वाला है। जो भगवान् को अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है, भगवान् उसे अपना बना लेते हैं।

श्री विष्णु कुमार गोयल

गीता में भगवान् ने बताया है कि जो मनुष्य नित्य मेरे मत का अनुसरण करते हैं, मुझमें श्रद्धा रखते हैं, दोष दृष्टि से रहित होते हैं वे बन्धन से रहित होते चले जाते हैं। वे जो भी कर्म करते हैं उनको भगवान् में अर्पण करते जाते हैं और बन्धन से रहित होते चले जाते हैं।

कर्मयोग में भावना की प्रधानता है। प्रबल भाव से यही मानना है कि भगवान् ही सब कुछ करने वाले हैं।

समुचित निष्ठा से किया गया कर्म उपासना हो जाता है।

गीता के अध्याय 10 के श्लोक 11 में भगवान् ने कहा है कि जो भक्त हर समय मेरी कथा में मग्न रहते हैं उन पर मैं अपनी अनुकम्पा से उनके हृदय में स्थित अन्धकार को अपने ज्ञान रूपी प्रकाश के द्वारा नष्ट कर देता हूँ।

हमें अपने सभी कर्मों को भगवान् के अर्पण कर देना चाहिए। कर्म समर्पण के द्वारा प्रभु की चेतना हममें जगने लगती है। पुराने संस्कारों का क्षय होता जाता है एवं नये संस्कार नहीं बनते हैं।

भक्त का दृष्टिकोण सकारात्मक होना चाहिये। इसके लिये खूब राम नाम का जाप करें जिससे उसमें आमूलचूल परिवर्तन होता चला जाता है।

दानदाताओं की सूची

(22 मई 2024 से 10 अगस्त 2024 तक)

साधकगण अपने दान की राशि चैक द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में जमा करवा सकते हैं।

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
BANK OF INDIA,
Haridwar
A/c No.: 721010110003147
I.F.S. Code: BKID0007210

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
HDFC BANK,
Bhoopatwala, Saptrishi Chungi, Haridwar
A/c No.: 50100537193693
I.F.S. Code: HDFC0005481

साधना धाम का PAN नम्बर AAKAS8917M है।

कृपा करके जमा करवाई हुई राशि का विवरण एवं अपना नाम और पता तथा PAN या आधार कार्ड नम्बर, पत्र, फोन, E-mail अथवा WhatsApp द्वारा साधना धाम कार्यालय में अवश्य सूचित करें। जिससे आपको रसीद आसानी से प्राप्त हो जायेगी।

– **रवि कान्त भण्डारी,** प्रबन्धक, साधना धाम, मोबाइल: 09872574514, 08273494285

1.	सुनीति देवी अग्रवाल, पीलीभीत	500000
2.	इज्जत राय उप्पल, लुधियाना	124000
3.	सोहन लाल गुप्ता (एसएम इण्डस्ट्रीज़), कानपुर	101000
4.	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	101000
5.	अजय अग्रवाल, बरेली	100000
6.	ऑनलाइन	100000
7.	पार्वती चौधरी, अलवर	100000
8.	मीरा चन्देल, नोएडा	100000
9.	ऑनलाइन	51000
10.	देशराज एंड संस, चंडीगढ़	51000
11.	गिरीश मोहन, हरिद्वार	51000
12.	लोपन मेटल्स, दिल्ली	51000
13.	गुरु पूर्णिमा कलेक्शन, हरिद्वार	40944
14.	ऑनलाइन	36470
15.	सचिन गुप्ता, कानपुर	25000
16.	सचिन गुप्ता, कानपुर	25000
17.	प्रतीक मित्तल, बीसलपुर	21000
18.	सत कुमार कपूर, गुरुग्राम	21000
19.	अर्पणा/के.के. नैय्यर, नई दिल्ली	21000
20.	सुमीर कुनरा, दिल्ली	21000
21.	स्वतन्त्र भण्डारी, अमृतसर	18000
22.	मिताली सेठ, नई दिल्ली	16000
23.	उमा सलूजा, लुधियाना	13000
24.	रमेश चन्द्र गुप्ता, गाजियाबाद	11001
25.	उषा पत्नी आर.सी. गुप्ता, गाजियाबाद	11001
26.	अशोक कुमार शर्मा, लखनऊ	11000
27.	सुनीति देवी अग्रवाल, पीलीभीत	11000
28.	राम कृपाल कटियार, तिलहर	11000
29.	विश्व मोहन सक्सैना, तिलहर	10000
30.	मधु खुल्लर, गुरूग्राम	10000
31.	डेमेसी कंज्यूमर प्राईवेट लिमिटेड	6000
32.	दिनेश बहल/अनु बहल, गुरुग्राम	6000

(शेष अगले पृष्ठ पर...)

(22.5.2024 से 10.8.2024 तक के दानदाताओं की सूची पिछले पृष्ठ से ...)

33.	दिनेश बहल/अनु बहल, गुरुग्राम	6000
34.	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	6000
35.	सुभाष चन्द्र अग्रवाल, बरेली	5100
36.	आंचल शुक्ला, प्रयागराज	5100
37.	अभिषेक अग्रवाल	5100
38.	शिवम अग्रवाल, फरीदाबाद	5100
39.	शशिकान्त कुलश्रेष्ठ, गाजियाबाद	5100
40.	हरिजी अग्रवाल, लखनऊ	5100
41.	नीता सहगल, नई दिल्ली	5100
42.	विजय कुमार कंसल, बरेली	5100
43.	विजय कुमार कंसल, बरेली	5100
44.	बृजेन्द्र गौड़, देहरादून	5100
45.	अजय कुमार तिवारी, कानपुर	5100
46.	ओम शंकर गुप्ता, कानपुर	5100
47.	प्रीति अग्रवाल, पीलीभीत	5100
48.	डॉ. आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	5100
49.	सरस्वती विद्या मन्दिर, बीसलपुर	5100
50.	रविकान्त शुक्ला, देहरादून	5100
51.	हरिओम अग्रवाल मुरादाबाद	5100
52.	सन्तोष गोयल, कोटद्वार	5100
53.	नीलू रल्हन, दिल्ली	5100
54.	लक्ष्मी देवी, अलवर	5100
55.	राजेश गुप्ता/कल्पना गुप्ता, बीसलपुर	5100
56.	सुनीता राठौड़, अहमदाबाद	5100
57.	डॉ. पुष्पा/अनिल गुप्ता, हरदोई	5100
58.	रमा शंकर गुप्ता, हरदोई	5100
59.	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5100
60.	राम चन्द्र लाल गुप्ता, पूरनपुर	5100
61.	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5100
62.	राम चन्द्र लाल गुप्ता, पूरनपुर	5100
63.	सतेन्द्र सिंह नेगी, अहमदाबाद	5001
64.	कामिनी तुली, गुरुग्राम	5000
65.	पुष्पा श्रीवास्तव, कानपुर	5000
66.	अजय अग्रवाल, बरेली	5000
67.	हरपाल सिंह राजपूत, हरिद्वार	5000
68.	कमला वर्मा (कानपुर सत्संग) कानपुर	5000
69.	हरपाल सिंह राजपूत, हरिद्वार	5000
70.	गुप्त दान (गुरु पूर्णिमा)	4950
71.	राधा/सुरेन्द्र अग्रवाल, बीसलपुर	4000
72.	सुरेन्द्र कुमार/राधा अग्रवाल, बीसलपुर	4000
73.	इज्जत राय/सन्तोष उप्पल, लुधियाना	3600
74.	विष्णु कुमार अग्रवाल, बरेली	3101
75.	सरोजिनी अग्रवाल, दिल्ली	3100
76.	चन्द्रभान गुप्ता, दिल्ली	3100
77.	दीपक पुत्र लेफ्टिनेंट राकेश अग्रवाल, बीसलपुर	3100
78.	प्रभाकर शुक्ला, ग्वालियर	3100
79.	चन्दन शर्मा, गुरुग्राम	3100
80.	मुकेश गुप्ता, दिल्ली	3100
81.	अनिल चन्द मित्तल, बीसलपुर	3100
82.	मुनीश महाजन, जालन्धर	3000
83.	प्रमोद कुमार गुप्ता, मुजफ्फरनगर	2600
84.	शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2500
85.	शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2500
86.	सुरेश चन्द्र गुप्ता, कानपुर	2500
87.	दीपक अग्रवाल, पीलीभीत	2500
88.	भारती गुप्ता, नोएडा	2500

(शेष अगले पृष्ठ पर...)

(22.5.2024 से 10.8.2024 तक के दानदाताओं की सूची पिछले पृष्ठ से ...)

89.	मीना बिजलवाण, हरिद्वार	2500	
90.	शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2500	
91.	गुप्त दान (गुरु पूर्णिमा)	2281	
92.	विष्णु कुमार अग्रवाल, बरेली	2101	
93.	आलोक उपाध्याय, बरेली	2100	
94.	चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	2100	
95.	आशा गुप्ता, दिल्ली	2100	
96.	चन्द्र मोहन शर्मा, नई दिल्ली	2100	
97.	सूरजभान सक्सेना, कानपुर	2100	
98.	नीता सहगल, नई दिल्ली	2100	
99.	कमल किशोर तिवारी, कानपुर	2100	
100.	मेसर्स गुरु इंटरप्राइजेज, कानपुर	2100	
101.	श्री गुरु ट्रेडर्स, कानपुर	2100	
102.	सूरजभान सक्सैना, कानपुर	2100	
103.	प्रभात कुमार	2100	
104.	सूरजभान सक्सैना, कानपुर	2100	
105.	नीता सहगल, नई दिल्ली	2100	
106.	युगल किशोर अग्रवाल	2100	
107.	शैलेन्द्र सिंह, बीसलपुर	2100	
108.	सुनेजा परिवार, सुमित, दिल्ली/गुरुग्राम	2100	
109.	अशोक कुमार शर्मा, लखनऊ	2100	
110.	डॉ. आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	2100	
111.	राजीव भारतीय एवं अंजू सक्सेना, बदायूँ	2100	
112.	सुधा गोयल, बीसलपुर	2100	
113.	अर्चना शुक्ला, बरेली	2100	
114.	इशिका मेहता जी, जयपुर	2100	
115.	के.एल. सेठी, दिल्ली	2100	
116.	हेमन्त पुत्र रमेश जयसवाल, कानपुर	2100	
117.	विकास कुमार गुप्ता, जालन्धर	2100	
118.	हरिओम प्रकाश अग्रवाल, काशीपुर	2100	
119.	रेखा पत्नी सुरेश कुमार गुप्ता, बीसलपुर	2100	
120.	मधुरिमा शुक्ला, ग्वालियर	2100	
121.	जनक नन्दिनी पत्नी एन.एन. पुरी, गुरुग्राम	2100	
122.	जनक नन्दिनी पत्नी एन.एन. पुरी, गुरुग्राम	2100	
123.	रामजी उर्फ पीयूष पोरवाल, कानपुर	2100	
124.	लेफ्टिनेंट भगवान प्रसाद भारती, कानपुर	2100	
125.	नीलू रलहन, दिल्ली	2100	
126.	किताबी देवी, कानपुर	2100	
127.	योगेश कुमार अग्रवाल, बीसलपुर	2100	
128.	शशि वाजपेई, कानपुर	2100	
129.	नरेंद्र कुमार दीक्षित, फरुखाबाद	2100	
130.	मोहित मित्तल, बीसलपुर	2100	
131.	अनिरुद्ध एवं राखी अग्निहोत्री, रूड़की	2100	
132.	अनिरुद्ध एवं राखी अग्निहोत्री, रूड़की	2100	
133.	जय प्रकाश डंगवाल, देहरादून	2100	
134.	देवेश कुमार, पीलीभीत	2100	
135.	मधु शुक्ला, कानपुर	2100	
136.	किरण द्विवेदी, प्रयागराज	2100	
137.	उषा पत्नी लेफ्टिनेंट कृष्ण कुमार अग्रवाल, बीसलपुर	2100	
138.	कमलेश मित्तल पत्नी आलोक मित्तल, बीसलपुर	2100	
139.	मधु बाला गर्ग, हरिद्वार	2100	
140.	अविनाश मेहता, करनाल	2100	

शोक समाचार

समस्त साधना परिवार को अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि निम्नलिखित साधक/साधिकाओं ने अपनी नश्वर देह को त्यागकर गुरुधाम में प्रस्थान किया –

दिनांक 22 फरवरी, 2024, शत्रुघन पार्क, कानपुर से साधना परिवार के साधक श्री प्रकाश नारायण शुक्ला जी का देहावसान हो गया था। उनकी स्मृति में उनकी पत्नी श्रीमती प्रमिला शुक्ला जी ने पूज्य गुरुदेव के चरणों में रु. 2100 की राशि अप्रैल माह में अर्पित की थी।

❖ ❖ ❖

बीसलपुर से हमारे वरिष्ठ साधक एवं साधना परिवार के अध्यक्ष श्री विष्णु कुमार गोयल जी के अनुज श्री राजेन्द्र गोयल जी की पत्नी श्रीमती सुधा अग्रवाल का स्वर्गवास दिनांक 5 जून, 2024 को हो गया था। उनकी स्मृति में श्री संचित अग्रवाल जी ने गुरुदेव के चरणों में रु. 2100 की राशि अर्पित की है।

❖ ❖ ❖

कानपुर से हमारे साधक श्री भगवान प्रसाद भारती अपनी नश्वर देह दिनांक 26 जून, 2024 को त्याग कर पूज्य गुरुदेव के चरणों में विलीन हो गये। उनके परिवार की ओर से गुरुदेव के चरणों में रु. 2100 की राशि स्मृति स्वरूप प्रदान की है।

❖ ❖ ❖

बिजनौर से हमारी वरिष्ठ साधिका श्रीमती प्रमोद बाला रस्तोगी पत्नी स्वर्गीय श्री प्रीतम सेन रस्तोगी जी का स्वर्गवास दिनांक 26 जुलाई, 2024 को हो गया था।

❖ ❖ ❖

बीसलपुर निवासी श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल अपनी नश्वर देह को त्याग कर पूज्य गुरुदेव के चरणों में विलीन हो गये।

❖ ❖ ❖

पूज्य गुरुदेव से विनम्र प्रार्थना है कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान दें तथा इनके परिवार जनों को इनका वियोग सहने की यथायोग्य शक्ति प्रदान करें। साधना परिवार के सभी साधक भाई-बहन अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

वार्षिक साधना शिविर-2024 कानपुर

शिविर-स्थलः जे.के. मन्दिर के पीछे सोसाइटी धर्मशाला पाण्डुनगर, गणेश शंकर विद्यार्थी स्कूल के सामने, कानपुर

पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा से श्री स्वामी रामानन्द साधना परिवार द्वारा प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कानपुर में **'वार्षिक शिविर'** का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर दिनांक 22 से 25 अक्तूबर 2024 तक होना निश्चित हुआ है।

25 अक्तूबर 2024 को प्रातः 7 बजे शिविर की पूर्ति और दोपहर 11.00 बजे पूज्य गुरुदेव का भण्डारा होगा।

आप सभी साधक भाई बहनों से विनम्र निवेदन है कि शिविर में सम्मिलित होकर पूज्य गुरुदेव का असीम आशीर्वाद और कृपा प्राप्त करें।

कृपया शिविर में सम्मिलित होने की सूचना 10 दिन पूर्व निम्न पते पर देने की कृपा करें। धन्यवाद!

श्रीमती सुशीला जायसवाल, 105/589 श्रीनगर, कानपुर, मोबाइलः 09322185891

बीसलपुर साधना शिविर-2024

शिविर स्थानः श्री अग्रवाल सभा भवन, स्टेशन रोड, बीसलपुर

पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा से श्री स्वामी रामानन्द साधना परिवार द्वारा प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी बीसलपुर में **'वार्षिक शिविर'** का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर दिनांक 7 से 10 नवम्बर 2024 तक होना निश्चित हुआ है।

शिविर प्रारम्भ - 7 नवम्बर 2024 सायं
शिविर पूर्ति - 10 नवम्बर 2024 प्रातः
भण्डारा - प्रातः 8-10 बजे

साधकों के लिए बर्तन एवं बिस्तर की व्यवस्था है। बीसलपुर पहुँचने के लिए बरेली से बसें हर 15 मिनट बाद चलती रहती हैं। शाहजहाँपुर से बस एवं रेल सेवा दोनों उपलब्ध हैं। बसें प्रत्येक 1 घन्टे के अन्तराल से एवं रेल छोटी लाइन रेलवे स्टेशन से प्रातः 6 बजे से 10 बजे तक और दोपहर 1 बजे से सायं 5.30 बजे तक उपलब्ध हैं। आप सभी साधक भाई बहनों से विनम्र निवेदन है कि शिविर में सम्मिलित होकर पूज्य गुरुदेव का असीम आशीर्वाद और कृपा प्राप्त करें।

शिविर में सम्मिलित होने की सूचना 10 दिन पूर्व निम्न पते पर देने की कृपा करें:-

श्री विष्णु कुमार गोयल, बीसलपुर, जिला पीलीभीत, मोबाइलः 09410818880

श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य

1.	अध्यात्म विकास	इन पुस्तकों में श्री स्वामी जी ने अपनी विकासवादी नवीनतम साधना पद्धति का विस्तार से वर्णन किया है।
2.	आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)	
3.	आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)	
4.	Evolutionary Outlook on Life	
5.	Evolutionary Spiritualism	
6.	जीवन-रहस्य तथा उत्पादिनी शक्ति	काम शक्ति तथा अध्यात्म विषय पर स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या
7.	गीता विमर्श	श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम 7 अध्यायों की स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या
8.	व्यावहारिक साधना	पूज्य स्वामी जी द्वारा लिखित तीन लेखों – (1) साधकों के लिये, (2) दम्पत्ति के लिये, (3) माता-पिता के प्रति का संकलन
9.	कैलाश-दर्शन	पूज्य स्वामी जी ने कुछ साधकों के साथ कैलाश-पर्वत की यात्रा व परिक्रमा की थी। उस यात्रा का एवं उनकी आत्मानुभूति का विशद् वर्णन
10.	गीतोपनिषद	श्रीमद्भगवद्गीता के आठ से अठारह अध्याय तक स्वर्गीय श्री के.सी. नैयर जी द्वारा व्याख्या
11.	हमारी साधना	श्री पुरुषोत्तम भटनागर द्वारा सम्पादित
12.	हमारी उपासना	
13.	साधना और व्यवहार	
14.	अशान्ति में	
15.	मेरे विचार	
16.	As I Understand	
17.	My Pilgrimage to Kailash	
18.	Sex and Spirituality	जीवन-रहस्य (प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तकें)
19.	Our Worship	हमारी साधना
20.	Our Spiritual Sadhana Part-I	आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)
21.	Our Spiritual Sadhana Part-II	आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)
22.	स्वामी रामानन्द-एक आध्यात्मिक यात्रा	स्वस्पष्ट प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना
23.	पत्र-पीयूष	कु. शीला गौहरी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के पत्रों का संकलन
24.	स्वामी रामानन्द-चरित सुधा	स्व. डा. कविराज नरेन्द्र कुमार एवम् वैद्य श्री सत्यदेव
25.	स्वामी रामानन्द-वचनामृत	श्री जगदीश प्रसाद द्विवेदी द्वारा गुरुदेव की पुस्तकों से संकलन
26.	मेरी दक्षिण भारत-यात्रा	पूज्य सुमित्रा माँ जी द्वारा दक्षिण भारत यात्रा का रोचक वर्णन
27.	पत्तियाँ और फूल	भजन, पद, कीर्तन, आरती आदि का संकलन
28.	दैनिक आवाहन विधि	स्वामी जी की साधना प्रणाली पर आधारित – श्रीमती महेश प्रकाश
29.	Letters to Seekers	कु. शीला गौहरी एवं श्री विजय भण्डारी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के अंग्रेजी पत्रों का संकलन
30.	आत्मा की ओर	
31.	जीवन विकास – एक दृष्टि	Evolutionary Outlook on Life का हिन्दी अनुवाद
32.	विकासात्मक अध्यात्म	Evolutionary Spiritualism का हिन्दी अनुवाद
33.	गुरु के प्रति निष्ठा	तेजेन्द्र प्रताप सिंह
34.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 1)	अनाम साधिका
35.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 2)	
36.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 3)	
37.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 4)	
38.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 5)	
39.	श्रीराम भजन माला	श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल 'राम सरन'
40.	माँ का भाव भरा प्रसाद गुरु का दिव्य प्रसाद	मीरा गुप्ता
41.	पत्र-पीयूष सार	पत्र-पीयूष का संग्रहीत संस्करण
42.	गीता पाठ	
43.	गृहस्थ और साधना	
44.	प्रभु दर्शन	
45.	प्रभु प्रसाद मिले तो	
46.	गीता प्रवेशिका	हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी में गीता का संग्रहीत संस्करण – रमेश चन्द्र गुप्त

बाल साधना शिविर के दृश्य

बाल साधना शिविर के दृश्य

बाल शिविर में पुरस्कार वितरण के अविस्मरणीय क्षण

ऊपरः गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आवाहन करते हुए अध्यक्ष श्री विष्णु कुमार जी गोयल

नीचेः गुरु पूर्णिमा के अवसर पर साधक श्री रमेश चन्द्र गुप्त द्वारा रचित दो पुस्तकों का गुरुदेव के चरणों में समर्पण